HINDI KAITHI.
1st Allahabad Ed.] [5,000 Copies.

PLAN OF SALVATION.

पापकाटने का सत उपाय॥

हे पिआरे हिंदु तुमहारे हमारे सासतर में बरनन है की सब मनुष्य अपने जनम दाता को छोड़ करके पापी और नरकी हुए हैं। लीख्खा है, की कोइ धरमी नहीं है, एक भी नहीं * सब भुले हुए हैं, सब के सब निकममे हैं, उनके मुंह सराप और कडुआहट से भरे हुए हैं * उनके पांव खुन बहाने के लीए चालाक हैं* बीनास और कलेस उनके रसतों में है * कुसल के रसते को नहीं जानते हैं॰ अफसोस पर अफसोस, की यह हम सभों का हाल हुआ है * आह आह दुरगत मनुष्य जो हम हैं कौन हम को ऐसे हाल से उदधार देगा?

थोड़े बहुत तो पापकाटने को कीरीया करम की राह धरते हैं* वे नाम लेते, पुजा करते, दान पुन करते, सास-तर पढ़ते जातरा तीरथ करते जोग उठाते हैं; और ऐसी कीरीया अपने उदधार की सीढ़ी को बुझाते हैं * पर

ऐसे कीनोया कनमसे उनहें कीया काम, हन कोई जा नता है, की बीना मन सुच कोए सब के सब असुच हैं, और सुच पनमेसन उनसे मनाया न जाएगा * सो पही ले मन को सुदच कनना मुनासीब होता * पन जो पाप जनमही से मन में लीपता है, सो कैसे छुटेगा? कोया कोई काला मनुष्य अपने रंग को और बाघ अपने बीन दां को पलट सकता है?

और थोड़े बझत अपने कीनोया कनम का आसना छोड़ के भुले भटके भेड़ों के समान भोन भींन गुनु के पास जाते हैं की कहीं न कहीं कोई नीकास मीले* गुनु तो कुछ बात कान में फुंकते, और अपने येलों से कहते हैं, की हमाने नाम के समनन कनो तो तुमहानी बेहतनी होगी, हम तुमहाने पाप को अपनी गीनती में कनके काटते हैं* पन अकल सीखाती है, की यह बात बड़ी भुल है* जो कोई मनुष्य अपने पाप को काटने नहीं सकता है, तो अपने येले के कैसे काटेगा?

कई ऐक जो भैंसों और बकनीओं के लोझ से अपने पाप का दंड घोडालने की आसा नख्ते हैं। यह दसतुन तो अगाड़ी से हो आया है, की इस मुलक के बझत लोग पनमेसन के कनोच थाम लेने को अपने जीव के बदले में कासी पसु का जीव बलीदान में यढ़ाते हैं* पन ऐसे बदले से पनमेसन कैसे नीहेगा? मनुष्य का जीव

श्रोन है, श्रोन पसु का जीव श्रोन है * मनुष्य में चेतन जीव, श्रोन पसु में जड़ जीव है* सो पसु का जीव मनुष्य के जीव से छोटा है, श्रोन अकल सोष्याती को छोटा जीव ब़ड़े जीव के दंड का ब़ोझ उठा नहीं सकता है *

पन जो को पसु के लोऊ से पाप नहीं छुटता है, तोसपन भी य़ह ष्यब़न तो हमाने तुमहानेसासतन में है,की ब़ीना लोऊब़हाए अनथात ब़ीना ब़लीदान दीए पाप जाता नहीं* पनमेसन जज्ज साहीब़ के ऐसी नीय़ाय़ कनता है, जैसा की जज साहीब़ ष्युनीश्रों को, वैसा ही पनमेसन पापीश्रों को, ब़े दंड छुटी न देता है* श्रोन जैसा की ब़ानी दंड कानुन का तेज जाता, श्रोन तनह तनह का जुलम श्रोन अचनम फैलता जाता, वैसाही पनमेसन के कानुन का तेज ब़े नीश्राए उड़ जाता, श्रोन तनह तनह का पाप सदा तक ब़े ठीकाने ब़ढ़ता जाता* पन जब़ पाप का दंड छुटता नहीं, तो हम तुम ननक से कैसे ब़चें? एक उपाय़ ब़ाकी है * पापी के वासते एक ठीक ब़दला चाहीये जो आप नीनदोष्य होके उसका दंड अपने ऊपन उठा के अपनी जान ब़लीदान में देता है * पन ऐसा ब़द-ला कहां से मीलेगा? मनुष्य में से कोई कीसी तनह से अपने भाई का ब़दला नहीं होसकता है, कीय़ोंकी सब़ के सब़ आप पापी, श्रोन दोष्यी ऊए हैं, श्रोन तुमहाने कोसी सासतन में य़ह ष्यब़न है नहीं, की नाम कीनीसन, ब़ाघ

महादेव, मुहमद, वगैरे ने अपनी जान पापी लोगों के वासते बलीदान में दे दीया है * वे सब अपने सुवारथ करके मर गए, और फीर नहीं आए हैं; पाप मोचन की खबर फैलाने को * सो उनसे तुमहारा कीया काम *

हे पीआरो जीस बलीदान के वसीले से सारे संसार का पाप काटा गया है, उसी की खबर हमारी पोथीओं में मीलती है * तौरेत जबुर नबीओं और मंगलसमाचार के पुसतक में तरह तरह के दलीलों के साथ यही खबर हैं, की परभु ईसामसीह परमेश्वर के पुतर का लोहू अरथात उसका बलीदान हो जाना पापी लोगों के पाप को काटता है * जीस को सुंने के कान हों सो सुने * अनेक अगले गवाहों से परभु ईसामसीह पापी लोगों का तरान करता रहता है । जीतने नबी उसके आगे यहूदीओं के मुलक में पुसत ब पुसत आए, तीतनों ने उसी के ऊपर गवाही दी * आसीआ नबी ने साढ़े सात सौ बरस उस से आगे उसी के बलीदान होने पर यही गवाही दी, की वुह हमारे अपराधों के लीए घायल कीया गया, और हमारी बुराईओं के लीए मारा गया है * हमारा दंड उसी पर पड़ा है, की हमारा कुसल परापत होए, और उसके कुचले जाने से हम चंगे हूए * हम सब भेड़ों के समान भटक गए, हर एक अपने रसते पर फीर गया, और परमेसर ने हम सभों के अपराध उसपर

घना * जव़ वुह मना ग्रैान घायल ज्ञुग्रा, तव़ उसने ग्रपना मुंह न प्पोला, मेमने के एैसा कीँ जीसे ह्लौंसा कनने को लेजाते, ग्रैान ग्नेड़ के एैसा जो नोम कटवैय़े के ग्रागे गुंगा है; जकनोग्रा नव़ी ने जो पांच सै व़नस पनग्नु से ग्रागे जीग्रा, उसी के लोझ के पनताप पन य़ह गवाही दी, की वुह सव़ देस के लोगों को कुसल की व़ात कनेगा, ग्रैान उसका नाज समंदन से समुंदन तक, ग्रैान नदी से पीनथीवी के ग्रतय़ंत सीवाने तक होगा * वही ग्रपने लोझ के व़ंदोव़सत से व़ंधुग्रों को गढ़े से जहां पानी न था, व़ाहन ले जाता है *

ग्रभी ग्रठानह सै तेंतालीस व़नस ज्ञुए, कीँ पनग्नु ईसा मसीह य़ज्ञदीय़ों के मुलक के व़ैतुललहम सहन में पैदा ज्ञुग्रा, ग्रैान ग्रपने सव़ नाम गुन ग्रैान चनीत्र से साने संसान का तनान कनता साव़ीत ज्ञुग्रा है * जव़ उसके जनम का वप्पत पज्ञंचा था, तव़ पनमेसन का दूत गव़ीनएल नाम मनीय़म एेक कनय़ा कुंग्रानी के पास उतना, ग्रैान उसे य़ह समाचान दीय़ा, कीँ घनमातमा तुझ पन उतनेगा, ग्रैान पनमेसन के पनाकनम का छाय़ा तुझ पन होगा, इस लीए वुह पाक पुत्र जो तुझ से पैदा होगा, पनमेसन का पुत्र कहलावेगा य़ह कहके उसने उ-सी का नाम ईसा ठहनाय़ा, जीस का ग्रनथ इव़ीनी ग्नाप्पा में तनान कनता है * जीस नात को व़ैतुललहम सहन

में उसी का जनम ऊआ था, तीसो में फरीन परमेसर के दुत ने उन यरवाहों को जो इस सहर के नजदीक मैदान में अपने हंड को रष्यवाली करते थे, दीष्याई दीया, और उन से कहा, की मत डरो; देष्यो मैं तुमहें एक मंगलसमायार पऊंयाता ऊं, जो सब लोगों का बड़े आनंद का कारन होगा, की आज दाउद के सहर में एक तरान करता पैदा ऊआ है; वह मसीह परभु है* और तुरंत उस दुत के साथ दुतों की एक मंडली परमेसर की असतुत करती और यह कहती ऊई परगट ऊई, की परमेसर को अतयंत उंये पर घन और परीथीवी पर कुसल और मनुष्यों में मीलाप होवे*

जब परभु ईसा की उमर तीस बरस की ऊई, तब वुह पापी लोगों का तरान करता होके यऊदीयों के सहरों मेंपरगट होने लगा * उसी वकत में यह आकास बांनी उसके ऊपर आई, की यह मेरा पीआरा पुत्र है, की जीस से मैं परसंन ऊं, और यही आसनानदायक ने उसे अपने पास आते देष्य करके उस पर यह गवाही दी, की देष्यो परमेसर का मेमना जो संसार का पाप ले जाता है* उसी वकत से लेके तरान करता के कीरीया करम उसी से परगट होते जाते थे * वही उनको, जो पाप के वासते बोयाकुल और उदासी थे, ष्यातीरजमा करता और उन का दुष्य और बीमारी उतारता रहा, अंधे,

लंगड़े गुंगे व्हने लुले कोढ़ो जो थे, उसो से यंगे ऊए * ऐक दोन लोग ऐक अनचांगो को यानपाई पन डाल के उस पास लाऐ * ईसा ने उन का वोसवास देष्य कनके उस अनचांगो से कहा, को हे पुत्र सुसथोन हो; तेना पाप छीमा कोया गया है * तव उन में से जो नजदोक ष्पड़े थे कोतनों ने अपने मन में कहा, को यह पनमेश्वन को अपनोंदा कनता है, पाप को सोवा पनमेस्वन के कौन छोमा कन सकता है, ईसा ने उन को योंता को जान कन के कहा, को कोस लीए अपने मन में वुनो योंता कनते हो? कौया कहना सहज है, को तेना पाप छीमा कोया गया, या यह को उठ ओन यल * पन ताको तुम जानो, को मुझे पोनथोवो पन पाप छोमा कनने को सामनथ है; उसने उस अनचांगो से कहा, को उठ अपनो यानपाई उठा के अपने घन को जा * तव वुह उठा, ओन अपने घन को यला गया *

तोन वनस पापो लोगों को सेवा में काट कनके उस ने अपने यलो को ष्पुलासे से ष्पोल दोया कि संसान का तानन ओन मुकत मेनो मोत से पनापत होगो * उसने उन से कहा, को मैं सेवा कनवाने को नहीं आया ऊं, वुल को सेवा कनने को, ओन अपनो जान वऊतेनों के वासते मोल में देने को * जैसा को मुसा ने पोतल के सांप को वोयावान में ऐक ष्पंभे पन उयाया है, ऐसा भो जनुन है,

की मनुष्य का पुत्र उठाया जाए, अनथात सुली पन, ताकी
जो कोई उस पन वीसवास लावे नसट न होवे, वलकी
अनंत जीवन पावे* इस के मुआफीक अपने मनन का
भेद खोल कनके वुह वानह चेलों को साथ ले कनके
येनोसालम को गया *

कैसे दुख पनभु ने वहां पाप काटने को उठाया है, सो
मती के मंगलसमाचान के पुसतक के छवीसवें औन
सताईसवें पनव से मालुम होता है* इस कथा के वमुजीव
सत वलीदान के सव चीह उसी में थे, वही पनमेसन का
औन मनुष्य का पुत्र होके साने संसान का भान उठानेके
लायक था, नीनदोखी, नीनमल, पवीत्र, पाप से फनक
औन सनग से वड़ा होके वही पापो क ऐसा अती वीया-
कुल महा नोंदीत औन महा दुखीत ऊआ है. कुनुस
पन टांगा जाके उसने पापी लोगों के लीए वीनती की,
औन उनहें खातीनजमा नखा है* औन अंत में उसने इस
खातीन जमई के साथ अपनी जान अपने पीता के वस में
की है, कीं पुना ऊआ *

गेथसमन के वागीचे में पनभु के संकट का सुनु ऊआ,
आधी नात जव ऊई थी, तव सनदानों के नौकन उसे
पकड़ने को आए* यह देख कनके पतनस ने अपने गुनु
को वचाने को तलवान खींची, औन ऐक सीपाही का
कान उड़ा दीया* तव ईसा ने उसे कहा, की अपनी

तलवार फीर मीयान में कर, के जो तलवार खींयते हैं, तलवार ही से नष्ट कीये जायेंगे, कीया तू नहीं जानता? की जो मैं अभी अपने पीता से मांगता, तुह इतों की बारह फौजों से अधीक मेरे पास हाजीर करता* पर धरम पुसतक की बात, की ऐसा होना जरुर है, तब कैसे पुरी होगी? यह कहके उसने उस सीपाही का कान फीर दुरुसत कीया, और सीपाहीओं से अपने हाथ बांधने दीया* सीपाहीओं ने उसे सरदार पुरोहीत के दालान में जहां यहुदीओं की सभा जमा हुई थी, लेगये* वहां पहुंय के परभु ने अपनी परमेसरी और मनुष्यता पर गवाही दी* सरदार पुरोहीत ने झुठे गवाहों से उस पर नालीस करवाई थी, पर उनकी गवाही न मीली थी* तब उस ने उठके ईसा से पुछा, की मैं तुझे जीते परमेसर की कीरया देता हुं, की जो तु वुह मसीह परमेसर का पुत्र है, तो हम से कह* ईसा ने जवाब में उसे कहा की मैं वही हुं और मैं तुम से कहता हुं, का बाद इसके तुम मनुष्य के पुत्र को परमेसर के दहीने हाथ बैठे हुए और आकास के बादलों पर आते हुए देखोगे* सरदार पुरोहीत ने यह सुन करके अपने कुसतर को फाड़ करके कहा की वुह पाखंड कह युका है, अब हम को आगे गवाही कीया जरुर है, तुम कीया सोयते हो? वे बोले की वुह मारे जाने के लायक है* सो जो की परभु

ने जाना की इस गवाही के सबब से मेरी जान जायगी तीस पर भी उस ने अपने को परमेसर का और मनुष्य का पुत्र मान लीआ है * पर ऐक ऐसा तरानकरता संसार के वासते जरुर था जीस में दोनों सुभाव परमेसर का और मनुष्य का ऐक दुसरे में लीन होते थे * जो वुह केवल परमेसर नीरंकाल होता था, तो वुह मनुष्यों का दंड कैसे भोगने पाया होता, और जो वुह केवल मनुष्य होता था, तो वुह सारे संसार का दंड कैसे अपने ऊपर उठाया होता ?

पर जान से मानने का इप्पतीयार उन दीनों में रुमीओं का था, यहुदीओं का मुलक रुमीओं के अमल में था * सो सरदार पुरोहीत ने सभा के साथ ईसा को बांधे हुऐ कयहरी में ले यले, और तरह तरह झुठी गवाही उस के ऊपर दी * पीलात जो रुमीओं की तरफ से हाकीम था, तो जानता था की यहुदीओं ने केवल डाह से ईसा को पकड़वाया था, इस वासते उसने उसे बयावने को कुछ उपाय कीआ * हर बीत जाने के परब में हाकीम का यह दसतुर था, की वुह लोगों के वासते ऐक कैदी को जीसे वे याहते थे छोड़ देता था * उसी वकत कैदप्पाने में ऐक प्पुनी था जो बरबाह कहावता था * पीलात ने यहुदीओं से कहा, की तुम कीस को याहते हो, की मैं तुमहारे लीए छोड़ों, बरबाह को, या ईसा को,

जो मसीह कहावता है, पर वे जो पुरोहीतों से उसकाए गए थे, यीशलाए की वरब्रह को* पीलात ने उनसे कहा, की फीर ईसा को मैं कीया करुं? सव के सब उसे वोले, की वुह कुरुस अरथात सुली पर माना जाय* तव हाकीम ने कहा कीयों उसने कीया अपराध कीआ है? पर वे और भी यीशला के वोले की उसे कुरुस दे कुरुस दे* तव पीलात ने देप्या, की उसका कुछ न चला, पर अधीक हुलड़ होता है, उसने पानी लेके मंडली के आगे हाथों को धोया, और कहा, की मैं इस सजजन के लोहु से नीर दोष्य हुं, तुमहीं जानो* तव सारे लोगों ने जवाव देके कहा, की उसका लोहु हम पर और हमारे वंस पर होवे* तव उसने उनके लीए वरब्राह को छोड़ दीया, और ईसा को कोड़े मारके कुरुस पर टांगा जाने के लीए सपुरद कीया* पीआरो यह कैसा वदला, ईसा धरमी होके पकड़ा जाता है, और वरब्राह प्युनी होके वच जाता है*

हुकुम कुरुस देने का पा करके सीपाहीओं के पहरे ने एकठे होके परभु को उघार के एक लाल वसतर पहीना या एक कांटों की पगरी वना के उसके सीर पर रप्पा उस के दहीने हाथ में एक नरकट दीआ, और परनाम करके यह ठठठा मारा, की हे यहुद यों के राजा सलाम* तव उनहों ने उसके मुंह पर थुका, उसके सीर पर पीटा, उस

के पीठ पर कोड़े मारा, उसके कांधों पर क्रुस की लकड़ी धरी, और उस पर मारने को उसे सहर से बाहीर ले चले॰ कतल करने के जागह में पहुंचके उनहों ने उसे हाथ पांव में कील ठोंके हुए क्रुस पर लगाया, और उसके वसतर को आपुस में बांट लीया॰ जो उस राह से गुजरते थे सो उसे यह कहके ठट्टे से उड़ाया की दोसरों को बचाया है, और अपने को बचाने नहीं सकता है॰ सो इस बड़े कुरुरता और लाज को परभु ने कैसे सहा है॰ उसने कहा की हे मेरे पीता उनहें छमा कर, की वे नहीं जानते की कया करते हैं॰ पापी लोगों का तरानकरता होके उसने उनके वासते बीनती की॰

ईसा के साथ और दो मनुष्य भी जो कुकरमी थे, इधर उधर एक उसके दहीने हाथ और दुसरा बायें क्रुस पर मारे गए थे, उन कुकरमीओं में से एक ने ईसा के हक मे यह पाषंड कहा, की जो तु मसीह है, तो आप को और हम को छुड़ा, पर दुसरे ने जवाब दे कर के कहा, की तु परमेसर से नहीं डरता? देख तु भी इसी दंड में संगी है, और हम ने नयाय से, की हम अपने करम का फल पाते हैं, पर इस मनुष्य ने कुछ बुकर को है॰ और उसने ईसा से कहा की हे परभु जब तु अपने राज में पहुंचे, तो मुझे याद कर॰ तब ईसा ने उसे कीया कहा? कुरुस पर हुए को वैकुंठका सुषतान

ठहना के उसने उसे कहा की मैं तुझे सत कहता हूं की आज तू मेने संग बैकुंठ में होगा।

दो पहन से तीन पहन तक उस सानेमुलक पन अंधीयाना छा गया। तब उसने बड़े सबद से चीललाके कहा की एली एली लामा सबाकतनी अनथात हे मेने ईसन हे मेने ईसन तूने मझे कीयों तयागा है। औान जब देष्या की सब कुछ पुना हुआ, उसने कहा, की पुना हुआ* हे मेने पीता मैं तेने हाथ में अपनी जान सौंपुनद कनता हूं। यह बात कहके उसने सीन झुकाके अपनी जान दी औान देष्यो मंदीन का पनदा उपन से नीचे तक फट गया, औान भुंईडोल हुई, औान पहाड़ तड़क गये, औान कबनें ष्युल गईं। औान जब सुबेदान औान उनहोंने जो उसके संग ईसा की नष्वाली कनते थे, भुंईडोल को औान जो कुछ की हीता था देष्या, वे यह कहके अपनी छाती पन पीटे, की यह सच मुच पनमेसन का पुत्र था* सो पनभु के तयागा जाने का अंधीयाना छा जाने का, भुमडोलने का, कबनें ष्युलने का, पहाड फटने का कया सबब हुआ होता, जो उसका मनन तनानकनते का न हुआ होता? पन जैसे पनभु की सानी संकट से वैसा ही उसकी महीमा से भी, जो उसे उसके बादमीली, यह समाधान दीढ हुआ है, की वुह साने संसान का सत तनान कनता है * पीआनी तुम जानते हो की जीतने जो

मन गए, सो मुरदों से फरीर नहीं आए है * पर परमु ईसा तीसरे दीन में व्रलीदान होने के व्राद फरीर मोत से जीतवनत ऊआ है * उसी का योला मीटी में नहीं नोब गया है * जीस योले को उसने व्रलीदान में दे दीया था, उसी को उसने फरीर जीलाया है, उसी में होके उसने अपने येलों को देप्पाई दीया है, उसी के साथ वही याजीस दीन के व्राद उनके सामने सरग पर यठ गया है, और अव्र तक परातनम की दहीनी ओार व्रैठे ऊए अपनी पवीतन आतमा को अपने मांगने वालों को देता है * सो जो ईसा ने अपने दो झूठ से सारे संसार का तरार करता ठहराया होता, तो वुह ऐसी महीमा को कैसे पाया होता ? कीया परमेसर मीथया व्रोलने वालों का व्रडाई करता है ? पर जो ईसा पापी लोगों का तरार करता होके ऐसी महीमा को पाया है, तो कीया इस से न नीकालता है, की उसका व्रलीदान सारे संसार के वासते मकवुल ऊआ, और पापी लोगों का दंड कटीत ऊआ है ?

पर यही समायार को मुलक मुलक के लोगों को सुना देने को परमु ने अपने येलों को भी फरमाया है * जी उठने के व्राद उनहें दीप्पाई देके उसने उनसे कहा, की ऐसा लीप्पा है और ऐसा जरूर था, की मसीह दुप्प उठावे और तीसरे दीन मुरदों में से जी उठे, और की

यनुसालम से लेके सब् लेगों में उसके नाम से तोबा

और पाप मोचन का उपदेस कीआ जाये इस लीए जाओ

और सारे देसीओं के पीता, और पुत्र, और धरमा

तमा के नाम से सनान देके सीष्य करो * और सब्, जो

मैं ने तुमहें ऊकुम कीआ है, पालन करने के उनहें

सीष्याओ, और देखे की मैं परतीदीन जगत के अंत

तक तुमहारे साथ ऊं * यह कहके और आसीरवाद दे

करके परभु अंतरधीयान ऊआ *

अठारह सै बरस से लेके अब् तक यह ऊकुम पुरा

कीआ जाता है * परभु के पहले चेले धरमातमा से

संपूरन होके देस देस में चले गए, और या जुवानी

या चीटठी लीष्य करके अपने परभु के लोऊ के परताप

के सभों के समुझाते थे * युहना परेरीत ने लीष्या है,

की हे मेरे ब्चचो मैं तुमहें लीष्यता ऊं, की तुम पाप न

करो * और जो कोई पाप करे तो पीता के पास धरमी

ईसा मसीह हमारा वकील है * वुह हमारे पापों का

ब्लीदान है, और केवल हमारे पापों का नहीं, ब्लकी

तमाम संसार का * पुलुस परेरीत ने गलातीओं के

यह तसल्ली दी, की मसीह ने हमके कानुन के स-

राप से छुडाया है, की वुह हमारे ब्दले में सरापीत

ऊआ है * पतरस परेरीत ने यह लीष्या है, की ईसाने

कुरूस पर हमारे पाप अपने देह पर उठा लीया है, की

हम पाप की तनफर मनके धनम की तनफर जीयें, ग्रान तुम उसके घाग्रों से यंगे ज्ञुए * ग्रान जो कोई तुम में से हम से पूछे, की तुम कैसे समायान सुनाते हो, तो दुसना है नहीं * पनभु ईसा मसीह हमाने दुवाने से तुम को भी यह कहके ग्रपने पास वुलाता है, की हे साने लोगो, जो थके ग्रान वड़े वोझ से दवे हो, मेने पास ग्राग्रा, ग्रान मैं तुमको सुष्प दूंगा * जो जीवन की नोटी सनग से उतनी, सो मैं ज्ञं * जो कोई इस नोटी से ष्पाए, सो सदा जीता नहेगा, ग्रान वुह नोटी जो मैं दूंगा, सो मेना सनीन है, जीसे मैं जगत के जीवन के लीए दूंगा* सो पीयानो पाप काटने के सत उपाय की ष्पवन पा कन के तुम ग्रपने मन कठान मत कनो * ग्रपने भाई वंद जात कुटुंव देष्प कनके फूला मत, ग्रान उनकी पास-दानी कनो मत * सय ता है, की सव जो पनभु ईसा मसीह का सनन पकडते हैं ग्रपने कुडमेत ग्रान जान पहीयानवालों से वज्ञत दुष्प ग्रान उपदनव उठाते हैं* पन साफ कहो, कीया वे तुमहाना पाप काटेंगे, जो तुम उनका सनन पकडते नहते हो * कीया कोई उन में से मनते काल तुमहाने संग यलेगा, तुमहाने वदले में जवाव देगा, तुमहाने दंड का भान ग्रपने ऊपन उठावेगा, या ननक के कसट से तुम को छुनेगा? सो उनसे कीया काम? फ्रीन मैाल के साफ कहो, जो पनभु ईषा

सुनदें से जींदा हे।के इस लोक श्रैान पनलोक का सुष्य तान है, कीया वुह तुमहानी पासदानी न कनगा जे तुम उसी का सनन पकड़ते हे। ? जब पतनस ने ईसा मसीह से पुछा की देष्ये। हमने सब कुछ छे।ड़ा है, श्रैान श्राप के पीछे हे। लीए, इस कानन से हमके कीया मीलेगा ? तब पनभ ने कहा, की मैं तुमहें सय कहता हूं, की जीस कीसी ने घन, या भाई, या बहीन या माता, या पीता, या पतनी, या लड़केबाले, या भु मेने नाम के प्यातीन छोड़ा है, सो सै। गुना पावेगा; श्रैान श्रनंत जीवन का वानीस होगा * जे। कोई मनुष्यें। के श्रागे सुझे मान लेगा उसे मैं भी श्रपने पीता के श्रागे जे। सनग में है, मान लेउंगा * पन जे। कोई मनुष्यें। के श्रागे सुझे मुकनेगा, उसे मैं भी श्रपने पीता के श्रागे जे। सनग में है मुकनुंगा, इस कानन श्रपने के। बीगाड़े। मत * बलकी मीथया श्रासना श्रें। के। छोड कन के जगत तानक ईसा मसीह का सनन पकड़े।, श्रैान उसके पास जा कन के बीनती कने।, की वुह तुम के। भी श्रपने बीसवासीश्रें। की गीनती में कने * पन ईसा मसीह के पास जाना कीया होता है? पनभ के पास जाना श्रैान तोबा कनना एक ही है * लेकीन तोबा कनना यह नहीं हैं, तोबा तोबा कन के पुकानना * सत तोबा यह है, पनमेसन के कीनपा के। जे। ईसा मसीह में पनगट हुश्रा है, याद कन के पाप के

वासते टुटे दील होना, और उसे हाथ उठाके धनमात-
मा का दान मांगना * जो जोग करम गयान कूलम के
रसते हैं, सो अभीमान तलक लेजाते हैं* तोबा का रस
ता परभु के पास ले जाता है * इस वासते उसने आप
बेन बेन बही रसते को सीखलाया है * उसने कहा की
तैाबा करो, सरग का राज नजदीक पऊंया है * धन
वे जो अपने मन में दीन हैं कीपरमेसर का राज उनहीं
का है * मैं तुम से सच कहता ऊं, जबतक तुम इस बा
लक के ऐसा मन में दीन न होजाओगे, तो तुम परमे
सर का राज देख भी न सकोगे * मांगो तो तुम को
दीया जायगा ढुंढो तो तुम पाओगे, खटखटाओ, तो
तुमहारे वासते खोला जायगा * जो कुछ तुम मेरा नाम
लेके पीता से मांगोगे वुह तुम को देगा *

पीआरो इस रसते को पकड़ो तनीक बीलंब मत
करो * अभी तुम जीते हो कीया जाने ऐक पाव घंटे में
तुमहारा दम गया होगा * अभी तैाबा की फुरसत
है* मरने के बाद ऐक घंटा फुरसत भी न मीलेगी *
पर वुह परभु ईसा मसीह, जो अपना लोऊ बलीदान में
दे करके अनंत महीमा में बीराजता है, तुमहारे उपर
कीरपा परकीरपा करे, और तुम को हर ऐक भले कारज
के वासते अपनी आतमा के वसीले से सुध करे* उसी को जुग
जुग राज और परताकरम और ऐसरय होवे* आमीन*

गीत

१ हे पापी लोग, सुनो, सब ईसा की बात;
(कीया हींदु, कीया मुसलमान—जो कोई जात;)
इस बात का धीयान करो, भुलयो मत;
अंत में तुमहें कीया बनेगा—होगी कीया गत?

२ हम सब अपराधी—हम पापी अधम!
अगाध इस भवसागर में बुड़ते हैं हम!
दीन नाथ—दीन बंधु—दीन का कोरपा नीधान
इस ही दया सींधु से जगत का तरान.

३ पाप अपना जो जाने, और उस से पछतावे,
वुह पाप से छुट जावे; न्याय भी वुह पावे;
ईसा नाम पर बीसवास करके होगा नीसतार
भवसागर में यों तो अब लांघेगा पार.

४ हे पापी जन, आव; कीयों करो बीलंब?
सब दुष्पो, संतापी, यह देष्पो अचंभ,
परभु ईसा के मरन से जीवन नीसचै!
ईसा बात पर संदेह तुम न करो, ऐ भाई

५ जो आवे, सो पावे अनुठा जो धन
कंगाल वुह न रहेगा; धनी वुह बन!
कीया जीवन, कीया मगन, वे दोनों समान
उन भकतों को जीनहों को मीलेगा तमान

ALLAHABAD PRESBYTERIAN MISSION PRESS.
1844.

1st Allahabad Ed.] [5,000 Copies.

THE TRUE INCARNATION.

सत अकलंकी अवतार का समाचार ।

हे प्यारो, तुमहारी पोथीयों में यह समाचार है, की परमेसर पाप काटने के लीए कुंवारी कंनीया के पेट से अवतार लेगा * वही अकलंकी होके एक घोड़े पर बैठ के पछीम की ओर से आवेगा, और अधरमीयों को तलवार से मारेगा * उसके पीछे वुह सतयुग को फीर चलावेगा *

इस समाचारकी कीतनी एक बात हमारे पंथ की बातों में मीलती हैं * पहीली बात बहुत मुनासीब है, की पाप काटने को कोई महापुरुष आवेस है, जो परमेसरीया से समपुरन हो * बहुत मुसलमान और हींदु यह चींता करते हैं, की पाप जो है; पीर पैगमबर, गुरु साधुओं से काटा जाता है * पर वे जो आप पापी हैं, सो औरों को पाप से कैसे उद्धार देंगे ? सो यही बात बहुत मुनासीब है, की केवल परमेसर के अवतार लीए से पाप कटीत होता है *

फरीन यह व्रान भी उयीत है, की पाप काटने को कोई अकलंकी अवतान अवेस है * जैसा गुनु, वैसाही येला * तुमहानी पे.थीयों में तो व्रऊत अवतानों की यनया है * पन सव के सव माया नुपी होके काम कानोच लोभ मोह अहंकान से कलंकी थें * तो उनसे पाप कैसे काटेगा ? असुच पानो में कपडा उजला कैसे हो सकता है ? इस कानन से यह व्रात व्रऊत उयीत है, को कोई अकलंको अवतान याहोये, जो अपने घनम के पनताप से पाप का व्रस काटे.

फरीन गीयान सीप्पातो है, की ऐक ऐसा अकलंकी पुनुप्प संसानीक नीत पन मा व्राप के दुवाना से उतपंन नहीं हो सकता है * जो वुह उनके पनताप से उतपंन हो जाता, तो वुह आवेस उनके ऐसा पापमय होता * जैसा सांप वैसा व्रया * सांप व्रीप्पवाला, तो उसके व्रये भी व्रीप्पवाले, सो यह व्रात भी गीआन को है, की वुह अकलंको अवतान आसयनज को नीत से अपने पनताप पनगट कनके जनम ले, श्रीन हम मानते हैं, की वुह कीसी कुंवानी के पेट से जनम लेनेहाना है *

पन यह व्रात हम कैसे मानें. की वुह घोड़े पन व्रैठ के घुभ घाम कनके आवेगा, श्रीन सव अघनमीयों को तलवान से मानेगा ? तुम सभों को मालुम है, की तलवान से तो पापी की गनदन मानी जाती है, पन उसका

पाप कैसे माना जाएगा ? पाप तो देह का नहीं, पर जीव का है * झुठ बोलना, लालच करना, कुइच्छा रखना, जीव में लीपटे हैं * सो जो धरमावतार तलवार खींच करके सब अधरमीयों को जान से मारता, तो कौन बच जाता, सब के सब नरक में जाते की नहीं ? फीर धरमी और सत लोग सतयुग का राज स्थापीत करने को कहां से मीलते ? हे पीआरो ऐसे अकलंकी अवतार की चरचा सच कैसे ठहरेगी ? और जो वुह सच होता, तो उसी से तुमहारा क्या लाभ नीकलता? तुम अधरमी होके ऐसे अवतार से भी नरक में डाले जाते, की नहीं ? सो कोई पुछे, की सत अकलंकी अव-तार कौन है, और उसने पाप काटने को क्या कीया है ? तो हम अभी इसका उतर देते हैं; चीत लगा करके परम् ईसा मसीह का समाचार सुन लो.

सदा पुरातन से परमेसर परब्रह्म का कोई एक-लौता पुत्र है * वुह कीसी जोनु से उतपंनन हुआ, परंतु जैसा की जोत जोत से नीकलती है, वैसाही वुह परमेसर से उतपंन हुआ, और जैसा जोत जोत में फीर लीन रहता, वैसाही वुह परमेसर में लीन रहा * वुह धरम ग्रंथ में भी बचन या कलाम कहलाता है, उसी से सरग पीरथवी उतपंन हुए हैं, और उसीके परताप से चलते हैं, मंगल समाचार के पुसतक में लीख्खा है, की

आरंभ में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था * यही आरंभ में परमेश्वर के साथ था * सब कुछ उस से उतपंन हुआ, और जो सब उतपन हुआ, उसमें से एक वसतु बीना उसके उतपंन न हुई * जीवन उस में था, और वुह जीवन मनुष्यों का जोत था *

पहीले मनुष्य इस वचन की जोत और गीयान में लीन हो चले जाते थे, वे सत और धरमी थे * पर जीस समय से मनुष्य ने अपनी अनुराग से हठ का सरन पकड़ा, तीसी समय से परभु की जोत उनसे हट गई * वे पापी और नरकी हुऐ * तौभी परमेश्वर के पुत्र ने उनहें न छोड़ दीया * जान करके की उन में से बहुत बीसवास कर के बच जाऐंगे, उसने आसचरज की रीत पर सचाई की जोत आगम गीआनीयों के दुवारा से मनुष्यों को फीर प्रोस दीया, और रोज करके यह, समाचार फैलाया, की पराने पराने समय पराना पराना रीत पर परमेसर का पुत्रपाप काटने को फीर अवतार लेगा, असीया आगम गीयानी से, जो साढ़े सात सौ बरस ईसा से आगे जीया, यह आगे को बात हो आई, की हमारे लीए ऐक बालक उतपंन होगा, और ऐक पुत्र दीया जाएगा, जीसके कांधे पर परभुता होगी, और उसका नाम कहावेगा आसचरजमय, मंत्री, सकतीमान

ईसन, सनातन का पीता, कुसल का नाजपुत्र* वुह पीनथीवी पन धनम नीयाय़ सथापीत कनेगा, औान उस के नाज का अंत न होगा* फरीन दुसनी जागह यह आगे की व़ात बोलती है, की पनमेसन तुम को ऐक चयन देगा, देष्पो ऐक कुंवानी पेट से होगी, औान ऐक पुत्र जनेगी, औान उसका नाम इमानुईल नष्पेगी अनथात पनमेसन हमाने संग*

पीआनो अव़ १८४४ व़नस ऊऐ की ऐ आगे की व़ातें पुनी ऊई हैं* पनमेसन के पुत्र ने यऊदीयों के देस व़ैतुलहम नगन में अवतान लीया है* ऐक कंवानी कंनीया के पेट से जनम लीऐ, उसने ईसा मसीह का नाम पाया *, जीसका अनथ है, मुकतदाता, धनमी लोगों का नाजा* उस के जनम की षनया लुका नयीत पहोले औान दुसने व़ाव़ में देष्पो* जीस नात में वुह व़डी दीनताई से कुंवानी मनीयम से उतपंन ऊआ था, तीसी में आकास का पनदा ष्पुल गया, पनमेसन का दुत उतन के षनवाहों को जीनहों ने व़ैतुलहम के नीकट अपने झुंड की नष्पवाली की, यह समाचान पऊंचाया, की डनो मत, देष्पो मैं तुमहें ऐक मंगल समाचान देता ऊं, जो सव़ लोगों के व़ड़े आनंद का कानन होगा, की आज दाउद के नगन में तुमहाने लीऐ ऐक मुकतदाता उतपंन ऊआ, वुह मसीह ष्पुदावंद

है, और तुरंत और दुतगन भी आकास के नीचे दीखाई दीए, और पीनथीवी के उपन यह कहके आसीनवाद मनाया, की अतयंत उंचे पनमेसन को असतुत, पीनथीवी पन कुसल, और मनुष्यों को मीलाप होवे*

अब कोई पुछे, कीं पनमेसन के पुत्र ने मनुष्य का सनुप धानन कनके पाप काटने को क्या कीया है, तो यही जाना याहीए, की वुह माया के खीला छोड़ कनके धनम और दया नुपी पनकास ज्ञआ है* जोत का सुभाव तो यह है, की वुह कीसी वसतु से असुध नहीं होता, और औनों की सेवा में नहता है* वैसाही ईसा मसीह जोत पुनुष्य का सुभाव भी पनगट ज्ञआ है, देष्य कनके की सानें संसान के लोग धनम नहींत और ननकी ऊए थे, उसने अतो दया, से जो धनम संसान की नोछ्या और मुकत के लीए आवेस था, सो पुना कीया है* जनम से लेके मनने तक उसी में धनमातमा की भन पुनी वीनाजती थी* वुध गीयान दया छीमा संतोष्य अधीनताई, पन सुवानथ उपकान उसके धनम का अनुसन था* जीस समय मसीह को उमन वानह वनस की थी, तीसी में यनोसलम वड़े सहन के सनदान पुनोहीत और पंडीत उसकी वुध और उतन से वीसमीत थे, और सव मनुष्य उसके सील सुभाव देष्य कनके

उस से पीनीत नप्पते थे॰ जव़ उसकी उमन तीस व़नस की ऊई थी, तव़ उसके घनम कनम वा ने य़ऊदीओं के देस में पनगट होने लगे॰ वुह अपनी सामनथ औन दय़ा नीज कनके दुप्पीय़ों के दुप्प उतानने में पनगट कनने लगा, अंधे आंप्प, व़हीने कान पाए, लंगड़ों को उसने पांव औन लुलों को हाथ दीय़ा॰ गुंगे उसके पनताप से व़ोलने लगे, औन कोढ़ी पवीतन ऊए॰ भुत लगेऊओं से भुत नीकले, औन मीनगीहे लोग यंगे ऊए॰ उसने कभी न पुछा, को हम को क्या मीलेगा? मुफ्त में वुह सभों का उपकानी था॰ वुह भी कधी नानाज न ऊआ, जो व़ऊत लुले, लंगड़े, गुंगे, कोढ़ी उसे घेने अथवा उसी के पीछे यले आए॰ उनहें देप्प कनके उसे दय़ा आई, औन उसने उनहें यंगा कीय़ा॰ दुप्पीय़ों का दुप्प उतानने के सोवा हन पनीछा में पाप को अपने व़स में कनना, सव़ आगे की व़ात पुनी कनना, पनमेसन का सत गुन पनगट कनना, अधनमीय़ों के लीए सीफानीस कनना, आगोआनों को उपदेस देना, उदासीय़ों को भनोसा देना, यंयल जो थे दीनढ़ कनना, व़ैनी लोगों को छीमा से सहना, औन असुचों को एक सुच नमुना देना, य़ही उसके यनीत्र के कनम थे॰

पन सत गुनु को य़ह धनम भी याहीए, की वुह अपने येलों का दोप्प औन दंड अपने भोग से मीटावे॰

सो ईसा ने यह धनम भी कीया है, की उसने सारे संसार का दोष्प और दंड अपनी गीनती में करके अपनी जान बलीदान में दी है* जीस रात वह दुसट लोगों के हाथों में पड़ा, तीस में उसने अपने येलों से कहा, की यह मेरा लङ्क ऐक नए नीयम का लङ्क है, जो वङ्कतेरो के पाप मोयन के लीए वहाया जाता है* अव इस संसार का सनदार आता है, पर उसी का मुझ में कुछ नहीं, परंतु जीसतें संसार पहीयाने, की मैं वाप को पीआर करता ऊं और उसकी इयक्षा के समान करम करता ऊं, उठो हम यले जावें* कैसा दुष्प इसी समय से उसी के जीव और देह में संसार के लीए परवेस कीया, उसके मरन की यरया से मालुम होता है* उसका देह सुली पर लटकता था, उस के हाथ पांव लोहे के कील से छेदे ऊए थे* उसके सीर में कांटों की टोपी गड़ गई थी, और उसका जीव पापी के ऐसा परमेसर से तयागा गया था* सारे संसार के पाप का दंड भोग करके उसने पुकारा, की पुरा ऊआ, हे मेरे वाप, मैं अपनी जान तेरे हाथ में सौंपता ऊं* यह कहके उसने अपनी जान दी*

हे पीआरो ऐसे धरम पर अव सोय करो* वुह केवल मनुष्प का नहीं था* आदी पुरुष्प का वही था* जो सनातन पुरातन से परमेसर का पुत्र है, उसने ऐसे

करम कीए श्रोर ऐसा जोग उठाया है॰ ऐसे घरम के महातम का अंत कौन पावेगा? कोई तम में से पुछे की ऐसे घरम से क्या कमाया गया है, तो हम क्या कहें? हमारे घरम गरंथ में यही समाधान है, की यह संसार उसी के कारन से चलता है, मुकत श्रोर अनंत जीवन अब उसी के दुवारा से मीलते हैं॰ लीष्या है, की जैसा की एक मनुष्य के अपराध के कारन से सारे मनुष्यों पर दंड की अगीषा ऊई, तैसाही एक धरमी के घरम के कारन सारे मनुष्य जीवन के लीए नीरदोष्य ठहरते हैं॰ कौनसा श्रोर सचाई ईसा मसीह से पऊंची है॰ सो जीतनी परमेसर की दया इस संसार पर परगट होती है, उतनी परभु ईसा के घरम की कमाई है॰ घर वार, अंन, जल, रात, दीन, कुसल छेम भाई, बंधु, जोरु, लड़के वाले, राज, श्रोर जीतनी अछी वसतों से तुम रीझते हो, उतनी परभु ईसा के पवीतर लऊ के मोल में तुम्हारे लीए मोल ली गई हैं॰ फीर पसचाताप करने का सावकास पाप मोचन का परानथ घरमातमा का दान, लेपालक पन का पद अनंत जीवन श्रोर मुकत की गत इतयादी अब उसी के दुवारा से तुम को श्रोर सब मनुष्यों को मीलती हैं, जो उसका सरन पकड़ते हैं॰ सो जो केवल परभु ईसा मसीह के घरम के कारन से यह संसार चलता श्रोर

दया का दुवाना वही है, तो उयीत से उयोत है, की नहीं, की तुम भी जीतने उतम पदानथ तुमहाने लीए आवेस हैं, केवल उसी के नाम से ंगो? यह संदेह मत कनो की वही पुनुप्प दुसने देस ओान समय का था* यहूदीओं के देस में उस ने जनम लीआ, ओान १८४४ वनस उस के समय से वीते, सो हम को उस से क्या समवंघ? तो यह सय है, की ईसा ने संसान के लीए घनम कनके ओान अपनी जान वलीदान में दे कनके सव पापी लोगों को पाप मोयन ओान अनंत जीवन कमाया है, तो यही कमाई तुमहाने लीए कीयोंकन नहीं होगी* इन समय के लोग, जो ईसा के घनम का पनताप पहीयानते वीसवास कनके अव अपने मोयन का नीसयय ठीक कन सकते की नहीं? हां जीन अगले लोगों को ईसा की मैात का भेद आगे की वात से पुख गया था, वे भी उसी से दीनढ़ हुए होंगे की नहीं?

फीन हे पीआनो यह संदेह भी मत कनो कीं पनभु ईसा ने जव से अपनी जान वलीदान में दी है, व वस ओान मनुप्पों से अलग हुआ है, अवीनासी पनमेसन का पुत्र मैात के वस में नहीं था* संसान के लीए मैात का कसट भोग कनके वही तीसने दीन में फीन देह समेत जी उठा, ओान यालीस दीन उसके पीछे अपने येलों के संनमुप्प सनग पन अंनतनघीआन हुआ है, की वह

सानी पीनथीवी के लोगों के वीच में अपना घनम नाज सथापीत कने* वुह अव अपने सवनगी सींहासन पन अपने वाप की दहनी ओान अनंत महीमा में वीनाजता है* पन वुह इसी में ऐसा नहीं वीनाजता है, जैसा नानायन जो लछमी के साथ औान कुछ नहीं जानता है, केवल अपना सुष्य* हमाने घनम गनंथ में यह मंगल समायान है, की पनभु ईसा मसीह महीमा के सींहासन पन पापी लोगों का ऐसा संतुष्य है, जैसे की वुह पीनथीवी में था* लीष्या है की ईसा मसीह आज औान कल औान सदा लो ऐक सां है* औान मसीह ने आप यनवाहे का दीनीसटांत अपने उपन लगा के यही कहा है, की मेनी भेड़ें मेना सवद सुनती हैं, औान मैं उनहें जानता ऊं, औान वे मेने पीछे पीछे आती हैं* औान मैं उनहें अनंत जीवन देताऊं, औान वे कभी नास न होंगी, औान कोई उनहें मेने हाथ से छीन न सकेगा, औान मेनी औान भी भेड़ें हैं, जो इस हुंड अनयात यऊ ीओ की नहीं* आवेस है की मैं उनहें भी लाउं, औान वे मेना सवद सुनेंगी, औान ऐक हुंड औान ऐक यनवाहा होगा* हन देस के पापी लोगों के लीए ईसा मसीह अवतक सीपनानीस कनता है* उदासी औान पाप के वोझ से, जो दव ऊए हैं, उनहें वुह अवतक आनाम औान संतोष्य मन में देता है* तो उसी से भेंट मांगते

उनहीं के घट में वुह अव्रतक गोय़ान श्रीन घनमनुपी आता, श्रौ न उन का पाप काटता है* दीनढ़ जो उस पन नहते, उनहें वुह अव्रतक अपना गोआन श्रीन घनम देता, श्रीन उनहीं के द्वाना से देस देस घनम श्रीन नीय़ाए सथापीत कनता है* श्रीन जोतने जो मनने तक उसकी सेवा में नहते हैं* उनहें वुह मनने के पीछे अपनी महोमा में पऊंया लेता है*

कोई इस व्रात को दलील पुछे, तो हम कहते हैं, की पनभु की मंडली पन, जो कलीसीश्रा कहलाती है, दीनीसट कनो; पनभु के येलों ने अपने पनभु से य़ह श्रागीश्रा पाई, की जव्रनदसती मत कनो* सत व्रयन तुमहाना तलवान, घनम तुमहाना व्रकतन, दय़ा तुम हाना तीन, श्रीन संतोष्प तुमहानी ढाल, होवे* ये़ हथीय़ान कमन में व्रांघ के तुम सव्र मुलकोश्रों को मेना सोष्प कनो* सनग श्रीन पीनथीवी की सानी सामनथ मेनी है* श्रीन देष्पो पनीतदीन संसान के श्रंत तक मैं तुमहाने संग ऊं* ऐसी श्रागीश्रा पा कनके वे पुनव्र पछोम उतन दष्पीन की श्रोन के देस में गए, श्रीन श्रनेक व्रीसवासीय़ों की मंडलीय़ां एकटठा की* य़ह देष्प कनके देस देस के श्रघय़ाष्प श्रीन पनघान ने नाना पनकान के उपाय़ कीए, य़ह दीन फ्रोन नसट कनने को* उनहों ने सैकड़ों सैकड़ों को जला जला, डुव्रा

हुवा, पटक पटक, दुष्प दे दे, छल वल कन मान डाला* पन नसट कीए हुओं से सैकड़ों औन वीसवास औन होयाव से समपुनन हुए* अव अठानह सौ वनस वीते, औन ननक के पराटक पनभु के गौनजे पन पनवल न हुए* कनोड़ कनोड़ उसके अमल में दाष्पील हुए* उंचे नीचे लोग, वड़े छोटे साने पीनथीवी के उपन उस के आगे अपने घुटने टेकते हैं, औन वनस वनस औन पनभु के सीष्प उन लोगों के वीच में समाते हैं, जो अवतक उस से दुन थे*

सो हे पीआनो ईसा मसीह का पनताप देष्प कनके उसी से भागो मत* अभी पनभु की इच्छा हुई है, की उसने पछीम की ओन से अपने पनेनीतों को इस देस में भी भेजा है, को उसका नाज इस देस में सथापीत कीया जाय* अभी पसयाताप को सवकास है* अभी दया का दीन पहुंचा है, सो तनीक वीलंव मत कनो वलकी ऐसे पनभु को पनसंन कनो, उसी से वीनती कनके अपने पाप छीमा कनवाओ* पाप मोचन औन घनमातमा का दान पा कनके उसी को अपना साना मन सौंप देओ, औन जो दीन तुमहाने लीए वाकी हैं, उनहें वीसवास मय होके उसी की सेवा में काटो* जो तुम ऐसा कीया कनोगे, तो मौत की घड़ी औन महा वीचान का दीन तुमहाने लीए डैनानी का कानन न

नहेगा॰ अती संतोष्प ओान आनाम वही तुमहाने मन में उतपंन कनेगा, जीस समय़ सानी दुनीय़ा के व़सतु तुम को छोड़ जाय़ेंगे* जैसे मसीह ने मीनतु के समय़ अपना पनान अपने व़ाप के हाथ में सोंपा, वैसाही तुम भी य़ह कहके कनोगे, की ऐ दीननाथ मैं अपनी जान तेने हाथ में सोंपता ऊं * ओान महा व़ीयान के दीन में जव़ मसीह का येहना देष्प कनके सव़ अव़ीसवासी, जो हे, कलपते नहेंगे, उसी के मुष्प से य़ही मनभावनी व़ात तुमहाने उपन भी नीकलेगी, की ऐ अछे ओान व़ीसवास मय़ सेवक तुम को घन हो तुम थोड़ी सी व़सतुन में व़ीसवास मय़ नीकले, मैं तमहें व़ऊत सी व़सतुन पन सन-दान कनुंगा तुम अपने पनभु के आनंद में पनवेस कनो जीसके सुंने के कान हों वुह सुने

अव़ीसवास ओान भुल पन हाय़ मानना

१ हाय़, मेना पापी यीत !
    कीय़ों भटकता अगीय़ान ?
तु भुल के फरीनता कैसा नीत,
    न ढुंढ के अपना तनान !

२ अव़ य़ीसु ष्पनीसट का पीआन
    न तुहे भाता है ;

और उसकी कीनपा से अपान
  तु नहीं नीछ्हता है *

३ य़ीसु ने दीय़ा पनान,
  दुन कनने हम से पाप—
हमाने कानन कनने तनान—
  मीटाने को संताप *

४ य़ह व़ात जीय़ें जानता है,
  तु मानता नहीं तीय़ें ;
हाय़ ! अव़ लोग न पहीयानता है ;
  अगीय़ान तु ऐसा कीय़ें ?

५ अव़ येत तु, मेने मन !
  न भुल के भुल के यल ;
अव़ खोज ले य़ीसु ख्नीसट का गुन,
  तो टुटे भुल का व़ल

पाप की दसा पन हाय़ मानना *

१ मुझे क्या आन व़ना है ?
  व़ीआकुल होता तन औन मन ;
तो य़ह व़यन सुना है—
  य़ीसु है अनाथ का धन *

२ देह जब दुनबल होगा है,
दबा नहा दीन श्रोन नात,
मन उदास हो गया है,
कुछ न मानी संत की बात॰

३ हाय! क्या दसा बनी यह!
मोत श्रोन पोश्राने जीतने हैं,
ये मीटा न सकते बुह;
उन से जंजाल कीतने हैं!

४ मेना कैसा है संताप
श्रहे पीता; मेनी सुन
छीमा कन तु मेने पाप;
दे तु श्रपने पुत का गुन॰

ALLAHABAD PRESBYTERIAN MISSION PRESS.
1844.

1ST EDITION.] [5.000 COPIES.

THE TEN COMMANDMENTS,

WITH SCRIPTURE PROOFS.

पनमेसन की दस अगीयाएं।

अान उनका वृननंन।

पनसन ? पहीली अगीया क्या है।

उतन. पहीली अगीया यह है, की तु मेने आगे दुसने को पनमेसन मत मान।

वृीवाद के ६ पनव ४ आयत।

सुनले हे इसनाईल पनमेसन हमाना ईसन एक पनमेसन है।

८१ गीत ८—९ आयत।

हे मेने लोगो सुनो, हे इसनाईल, जो तु मेनी सुनेगा; तो मैं तेने लीए साप्धी दुंगा तुह में कोई उपनी देव न होवे, तु कीसी उपनी देव की पुजा न कन।

अषाया का ४४ पनव ६ आयत।

पनमेसन इसनाईल का नाजा अान उसका मुकतदाता

सेनाओं का परमेसर यों कहता है, मैं आदी और मैं अनंत हूं; और मुझे छोड़ कोई ईसर नहीं है।

होसीआ का १३ पर्व ४ आयत।

तथापी मैं परमेसर तेरा ईसर तुझे मीसर देस से नीकाल लाया, मुझे छोड़ तु दुसरे को ईसर मत जानीयो, कीयोंकी मुझे छोड़ तुने कीसी ईसर को नहीं जाना, और मुझे छोड़ कोइ मुकतदाता नहीं।

प: पहीली अगीया हम से क्या चाहती है?

उ: पहीली अगीया हम से यह चाहती है, को हम अकेले और सचे परमेसर को जानें, और मानें, और केवल उसकी भकती और सतुत में लवलीन रहें।

व्योवाद के ४ पर्व ९५ आयत।

यह सब तुझे दीखाया गया, जीसतें तु जाने, की परमेसर वही ईसर है, और उसे छोड़ कोई नहीं है, ३९ आयत। सो आज के दीन जान और अपने मन में सोच, की परमेसर उपर सरग में और नीचे पीरथीवी में वुह ईसर है, और कोई नहीं है।

इरमीया का १० पर्व १० आयत।

परंतु परमेसर सत ईसर जीवता ईसर और सनातन का राजा उसके कोप से पीरथीवी थरथरावेगी, और जातगन उसके जलजलाहट को नहीं सह सकेगा।

४८ गीत १४ आयत।

कीयोंकी यही ईसन हमाने सनातन का ईसन है, औान मीनतु लों वही हमाना अगुवा होगा।

मती का ४ पनव्र १० आयत।

यह लोप्पा है, कीं पनमेसन अपने ईसन की पुजा कन, औान केवल उसी की सेवा कन।

२९ गीत २ आयत।

उसके नाम की पनतीसठा पनमेसन को देओ, पवीतनता की सुंदनता में पनमेसन की सेवा कनो।

१४५ गीत १—२ आयत।

हे ईसन मेने नाजा, मैं तेनी सतुत कनुंगा, औान मैं सदा तेने नाम का घनवाद कनुंगा, मैं पनतीदीन तेना घनवाद कनुंगा, औान सदा तेने नाम की सतुत कनुंगा।

जातना १५ पनव्र ११ आयत।

हे पनमेसन देवों में तेने तुल कौन है? पवीतनता में तेने तुल तेजमय कौन है? तेनी नाईं आसयनज कनते सतुत में भयंकन।

पः पहीली अगीया क्या व्रनजती है?

उः पहीली अगीया यह व्रनजती है, की हम अकेले औान सये पनमेसन का नकान कनें, औान न उसे छोड़ दुसने को पनमेसन जानें, औान न औानों के भजन औान पनानथना कनें।

१४ गीत १ आयत।

मुनष्य ने अपने मन में कहा है, की ईसन नहीं, वे सड़ गए हैं, उनहोने, घीनैाना कानज कीया है, कोई भलाई नहीं कनता।

दानीयाल ५ पनव २२ आयत।

श्रैान अपने यांदी, श्रैान सोने, श्रैान पीतल, श्रैान लोहे, श्रैान काठ श्रैान पथन के देवों की सतुत की, जो न देष्पते हैं, न सुनते हैं, श्रैान न जानते हैं, श्रैान अपने उस ईसन की महीमा न की, जीस के हाथ में आप का सांस है, श्रैान आप की सानीयाल जीस की है।

मती का १५ पनव ८ आयत।

की ये लोग अपने मुंह से मेने पास आते हैं, श्रैान होंठों से मेना सनमान कनते हैं, पनंतु उनका मन मुह से दुन है।

असाया का ४२ पनव ८ आयत।

मैं पनमेसन हूं, यह मेना नाम है, श्रैान मैं अपना वीभव दुसने को श्रैान अपनी सतुत प्पोदी हुई मुनतों को न दुंगा।

पः पहीली अगीया से हमें क्या सीप्पा याहीए?

उः पहीली अगीया से हमें यह सीप्पा याहीए, की

परमेश्वर जो सब कुछ देखता और जानता है, मुरत पुजा से अती असंतुसट है।

इबरानीयों को ४ पर्ब १३ आयत।

और कोई सीर्सीसट उसकी दीरीसट से छीपी नहीं, परंतु समसत बसतें उसके नेत्र के आगे जीस से हम को काम है, नंगी और खुली ऊई है।

सुलेमान का ५ पर्ब २१ आयत।

कीयोंकी मनुष्य की याल परमेश्वर की आंखों के आगे है, और वुह उस की सारी यलन को जांयता है।

४४ गीत २०—२१ आयत।

यदी हम ने अपने ईसर के नाम को बीसराया है, अथवा उपरी देव की ओर हाथ फैलाया है, तो क्या ईसर इसको भेद न लेगा, कीयोंकी वुह मन के भेदों को जानता है।

बीवाद का ३२ पर्ब १६—१७ आ्यत।

उनहों ने उपरी देवतों के कारन उसे हल दीया, और उनहों ने उसे घीनीतों से रीस दीलाया, उनहों ने पीसायों के लीए बलीदान यढ़ाए, जो ईसर न थे, परंतु उन देवतों के लीए जीनको वे न पहीयानते थे, वे देवता, जो थोड़े दीनो से परगट ऊए, जीन से तुमहारे पीत्र न डरते थे।

प: दुसनी अगीया क्या है ?

उ: दुसनी आगीया यह है, की तु अपने लीए प्पोद के कीसी वृसतु की मुनत और कीसी वृसत् की पनतीमा, जो उपन सनग में अथवा नीचे पीनथीवी में अथवा जल में, जो पीनथीवी के नीचे है मत वनाइयो, उनको पननाम मत कीजोएा, न उनकी सेवा कीजीएा, इस लीए की मैं पनमेसन तेना ईसन जलीत ईसन हुं, पीतनों के अपनाघ का दंड उनके पुत्र को, जो मेना वैन नप्पते हैं, उनकी तीसनी और चैाथी पीढी लों देवैया हुं, और उन में से सहसनों पन जो मुझे पनेम कनते हैं, और मेनी अगीयाओं को पालन कनते हैं, दया कनता हुं।

वीवाद का ४ पनव १५—१९ आयत।

सो तुम आप से वृहुत चैाकस नहो, कोयोंकी जीस दीन पनमेसन ने होनेव में आग के मध में से तुमहाने साथ वातें कहीं, तुम ने कीसी पनकान का नुप न देप्पा, ऐस न हो, की तुम वीगड़ जाओ, और अपने लीए प्पोदी हुई मुनत कीसी पुनुप्प अथवा इसतनी की पनतीमा वनाओ, कीसी पसु की पनतीमा, जो पीनथीवी पन है, अथवा कीसी पंछी का नुप, जो आकास में उड़ते हैं, अथ-वा कीसी जंतु का नुप, जो भुमी पन नेंगते हैं, अथवा कीसी मछली का नुप, जो पीनथीवी के नीचे पानीयों में हैं,

ऐसा न हो, की तुम सनग की ओान आप्पेँ उठावो, ओान सुनज, ओान यंदनमा, ओान तानेँा को, ओान आकास की समसत सेनाओां को देप्पो, तव़ उनहेँ पुजने को व़गदाए जाओा, ओान उनकी सेवा कनो, जीनहेँ पनमेसन ने सनग के तजे समसत जातीगनों के लीए व़ीभाग कीया है।

लैवव़ैवसथा २६ पनव़ १ आयत।

अपने लीए मुनत अथवा प्पोदी ऊई पनतीमा मत व़नाइयो, ओान सथापीत मुनत मत युनोयो, ओान दंड-वत कनने के लीए पथन की मुनत सथापीन मत कनीयो कीयोंकी मैं पनमेसन तुमहाना ईसन हों।

जातना का १४ पनव़ ६—७ आयत।

ओान पनमेसन उसके आगे से यला, ओान पनयान कीया, की पनमेसन, पनमेसन ईसन दयाल ओान कीन-पाल ओान घीन ओान भलाई मेँ ओान सयाई मेँ अधीक है, सहसनो के लीए दया नप्पता है, पाप ओान अपनाघ ओान युक को छीमा कनता है, ओान जो कीसी भांत से अपनाघी को नीनदोप्पी न ठहनावेगा, ओान जो पीतनों के पाप का उनके पुत्नों, ओान पोत्नों पन तीसनी ओान योथी पीढ़ी लों पनतीफल दायक है।

व़ीवाद का २७ पनव़ १५ आयत।

की वुह पुनुप्प सनापीत है, जो प्पोद के अथवा ढाल

के मुनत व़नावे, जो पनमेसन के आगे घीनोत है, औान कानजकानी के हाथ के व़नाए हुए औान गुपत सथान में नक्खें।

प: दुसनी अगीय़ा हम से क्या याहती है?

उ: दुसनी अगीय़ा हम से य़ह याहती है, की हम सये होनदय़ से पनमेसन के भजन कनें, औान उसकी समसत सथापीत को हुई अगीय़ाओं को गीनहन औान पुनो कनें।

व़ीवाद का १२ पनव़ ३२ आय़त।

तुम हन एक व़ात को, जो मैं तुमहें कहता हुं, सोय के मानीयो, उसमें न व़ढ़ाइयो न उसमें घटाइयो।

इजकीय़ल २० पनव़ १८—२० आय़त।

पनंतु व़न में उनके संतानों को कहा, की तुम लोग अपने पीतनों के व़ीधीन पन मत यलो, औान उनके व़ीयान को मत मानो, औान उनकी मुनतों से आप को असुध न कनो, मैं ही पनमेसन तुमहाना ईसन, मेनी व़ोध पन यलो, औान मेनी नीनपालो औान मानो, औान मेने व़ीसनामों को पवीतन मानो, औान वे मेने औान तुमहाने मध में यींह होंगे, जीसतें जानो की मैं ही पनमेसन तुमहाना ईसन हुं।

मती २८ पत्र्व १९—२० आय़त।

इस लीए जाओ, और सारे देसोय़ों को पीता पुत्र और धरमातमा के नाम से सनान देके सीष्य करो, और सब, जो मैंने तुमहें अगीय़ा की है, पालन करने को उनहें सीष्याओ, और देष्यो कीपरती दीन जगत की समापत होां मैं तुमहारे संग ऊं।   आमीन॥

प: दुसरी अगीय़ा क्या बरजती है?

उ: दुसरी अगीय़ा य़ह बरजती है, की हम ईसर को मुरतों के दवारा अथवा और कीसी रीत से, जो उसके बचन में सथापीत नहीं है न पूजें।

ब्रीवाद का ४ पत्र्व २ आय़त।

तुम उस बात में, जो मैं तुमहें कहता ऊं, कुछ मत मीलाइय़ो न घटाइय़ो, जीसतें तुम परमेसर अपने ईसर की अगीय़ाओं को, जो मैं तुमहें अगीय़ा करता ऊं, पालन करो।

मती का १५ पत्र्व ६ आय़त।

पर वे मेरी सेवा ब्रीरथा करते हैं, की मनुष्यों की अगीय़ा का उपदेस करते हैं।

परेरीतों का १७ पत्र्व २८—२९ आय़त।

कीय़ोंकी हम लोग उसी से जीते चलते फीरते और

सधीन हैं, जैसा की तुमहारे ही कीतने कवीतों ने भी कहा है, की हम तो उसी के वंस हैं, सो जो हम ईसर के वंस हैं, तो हमें समझने को उचीत नहीं, की ईसर सोने अथवा रूपे अथवा पथर के समान है, जो मनुष्य के मंतर और वनावट से है।

रुमीयों १ परब १८—१९ आयत।

कीयोंकी ईसर का कोरोध मनुष्य की समसत अधरम-ता और असतता पर सरग से परगट हुआ, जो सत को असतता से वंद करते हैं, इसलीए की ईसर का वीष्ये, जो कुछ जाना जा सकता है, उन पर परगट है, कीयोंकी ईसर ने उन पर परगट कीया है, इस लीए की उस के गुन, जो जगत की उतपत से अदीरीस हैं, अरथात उसका अनंत पराकरम, और ईसरतव सीरीसट पर दीरीसट करने से पहीचाना जाता है, यहां लों की वे नीरुतर हैं, कीयोंकी उनहोंने ईसर को योनह के उस की महीमा उस के ईसरतव के योग न कीया, और न उसका धन माना, परंतु अपनी भावना से वहक गए, और उस के अंतःकरन अगयानता से अंधीयारे हुए, वे अपने को गीयानी ठहराके मुरष्य वन गए, और उनहोंने अ-वीनासी ईसर की महीमा को वीनास मान, मनुष्य की, और पछीअन, और पसुन, और रेंगनेहार जंतु के स-

नुप से व़द्‌ल डाला, इस कान्न ईसन ने भी उनहें तय़ाग कीय़ा, की अपने अपने मन की कामना के समान अ· पवीतनता में नहें, औान आपुस में अपने सनीनों का नीनादन कनें।

प. दुसनी अगीय़ा से हमें क्या सीप्पा याहीए ?

उ: दुसनीं अगीय़ा से हमें य़ह सीप्पा याहीए, की पनमेसन हमाना सवामी है, औान उयोत है, की हम केवल उसी की व़डाई कनें।

काल कीं १ पुसतक २९ पनव़ ११—१२ आय़त।

हे पनमेसन व़डाई औान पनाकनम औान ऐसनज औान जै औान महीमा तेनो, कीय़ोंकी सनग औान पीनथीवी में के सव़ तेने हैं, हे पनमेसन नाज तेना औान तु सभों पन सनेसट उभाड़ा ऊआ है, धन औान पनतीसठा तुही से, औान तु सभों पन नाज कनता है, तेने हाथ में पनाकनम औान सामनथ व़ढ़ा, औान सव़ को पनाकनम देना तेने हाथ में है।

९५ गीत ६—७ आय़त।

आओ हम दंडवत कनें, औान झुकें औान अपने कनता पनमेसन के आगे घुटने टेकें, कीय़ोंकी वुह हमाना ईसन है, औान हम उसके झुंड के लोग, औान उसके हाथ की भेडें हैं।

१०० गीत ३ आयत।

जाने की परमेसर ईसर है, हमने आप को नहीं परंतु उसी ने हमें सीरजा, हम उसके लोग, और उसकी चराई की भेड़ें हैं।

जातरा का ३४ परव १४ आयत।

इस लीए कीसी देव को पुजा न करो, कीयोंकी वुह परमेसर जीसका नाम जलन है, जलीत ईसर है।

व्रीवाद का ३२ परव ७ आयत।

कीयोंकी परमेसर का भाग उसके लोग हैं, याकुव उस के अधीकार की रसी है।

प: तीसरी अगीया क्या है?

उ: तीसरी अगीया यह है, की तु अपने परभु ईसर का नाम अकारथ मत ले, कोयोंकी जो उस का नाम अकारथ लेता है, ईसर उसे नीरदोष्पी न ठहरावेगा।

लैवव्रैवसता १६ परव १२ आयत।

और मेरे नाम लेके झुठी कीरीया मत ष्पाओ, तु अपने ईसर के नाम को अपवीतर मत कर, मैं परमेसर ऊं।

व्रीव्राद का २८ परव ५८—५९ आयत।

यदी तु पालन करके व्रैवसथा के समसत व्रयन पर, जो उस पुसतक में लीष्पे हैं न चलेगा, जीस तें तु उसके

तेजमय़ और भय़ंकर नाम से, जो परमेश्वर तेरा ईश्वर है न डरे, तब़ परमेश्वर तेरी मरीय़ों को, और ब़ंस की मरीय़ों को अनयात ब़ड़ी ब़ड़ी मरीय़ों को, जो ब़ऊत दीन ताईं रहेंगी, और ब़ड़े ब़ड़े रोगों को, जो ब़ऊत दीन लों रहेंगे, आस्चयरजीत ब़नावेगा।

मती का ५ पर्ब़ ३४—३७ आय़त।

पर मैं तुमहें कहता ऊं, की कीसी रीत से कीरीय़ा मत खाओ, न तो सरग की, कीय़ोंकी वुह ईसर का सींहासन है, न तो पींरथ़वी की, कीय़ोंकी वुह उसके चरनकी पीढ़ी है, न तो ईरोसलीम की, कीय़ोंकी वुह महाराज का नगर है, अपने सीर की कीरीय़ा मत खा, कीय़ोंकी तु एक ब़ालको उजला अथवा काला नहीं करसकता, परंत तुमहारी ब़ातचीत हां हां नहीं नहीं होवे, कीय़ोंकी जो इन से अधीक है सो दुसट से होते है।

प: तीसरी अगीय़ा हम से क्या चाहती है?

उ: तीसरी अगीय़ा हम से य़ह चाहती है, की हम परमेश्वर के धरम पुसतक और अगीय़ाओं को आदर से मानें, और उसकी परारथना अधीनता से करें, और उस के नाम और समसत कारज की ब़ड़ाई करें।

असाय़ा का ६ पर्ब़ ३ आय़त।

और एक दुत ने दुसरे दुत को पुकारा, और कहा

पवीतन, पवीतन, पवीतन, सेनाओं का पनमेसन, उसके प्रीभव से सानी पीनथीवी पनीपुनन है।

युहंना दैवय़ ४ पनव़ ८ आय़त।

ओान वे नात दीन दुस कहने से येन न कनते थे, की पवीतन, पवीतन, पवीतन, पनभु ईसन समसत पनाकनमी जो था ओान है, ओान आने को है।

१५ पनव़ १—४ आय़त।

की महान ओान आसयनज तेने कानज; हे पनभु ईसन सव़ सामनथी तेने मानग सथे ओान ठीक हैं; हे साधुन के नाजा, हे पनभु कौन तुह से न डनेगा, ओान तेने नाम की महीमा न कनेगा? कीय़ोंकी तु अकेला पवीतन, नीसचै समसत लोग आवेंगे, ओान तेने आगे पुजा कनेंगे।

८६ गीत ९ आय़त।

हे पनभु, साने देसो जीनहें तु ने सीनजा है आवेंगे, ओान तेने आगे दंडवत कनेंगे, ओान तेने नाम की व़डाई कनेंगे।

१०४ गीत २४ आय़त।

हे पनमेसन, तेनी नचना क्याही व़हुत हैं, तु ने उन सभों को व़ुध से व़नाय़ा है, पीनथीवी तेने धन से पुनन है।

मलाप्पी का ३ पनव् १६ आयत।

तव् वे, जो पनमेसन को डनते थे, हन प्रेक अपने अपने पनोसी से व्रातयोत कनता था, और पनमेसन ने कान लगा के सुना और उनके लोए, जो पनमेसन से डनते थे, और उनके लोए, जो उसके नाम का घीयान कनते थे, समनन के लोए उसके आगे प्रेक पुसतक लीप्पी गई, सेनाओं का पनमेसन कहता है, की उस दीन, जो मैं ठहनाओंगा, वे मेने लोए प्रेक वीसेस जडान होंगे, और मैं उनहें प्रैसा व्रयाओंगा, जैसा मनुष्य अपने सेवक पुत्र को व्रयाता है।

प: तीसनी आगीया क्या व्रनजती है?

उ: तीसनो आगीया यह व्रनजती है, की हम कीसी व्रात को, की जीन से पनमेसन अपने तई पनकास कनता है ठठा न समहें, और उसका नाम हलकाई से न लेवें।

लैव्रय का १८ पनव् २१ आयत।

और अपने पनमेसन के नाम को अननोत से मत ले, मैं पनमेसन ऊं।

याकुव् का ५ पनव् १२ आयत।

पन सव् से पहीले हे मेने भाईओ कीनीया न प्पाओ, न तो सनग की, न पीनथीवी की, न तो और कीसी की

कीनीया, पनंतु तुम हाना हां हां औनतुम हाना ना ना; न हो की तुम दोष्प में पड़ो।

मता का २३ पनव़ १६—१७ आयत।

घने अंधे अगुआ, तुम पन हाय़ है, जो कहते हो, की जो कोई मंदीन की कीनीया प्याए, सो कुछ नहीं, पनंतु जो कोई मंदीन के सोने को कीनीया प्याय़, सो उदघाननीक है, अने मुनप औान अंधे कौन अती वड़ा है, सोना अथवा मंदीन, जो सोने को पवीतन कनता है।

२४ गीत ३—४ आयत।

पनमेसन के पहाड़ पन कौन यढ़ेगा? औान उस के पवीतन सथान में कौन प्पड़ा होगा? वही जीस के हाथ सुघ, औान जीसका मन पवीतन है, जीसने अपने पनान को व़ीनथा की औान न उठाय़ा, जीसने छल से कीनीया न प्पाई।

लेवीत २२ पनव़ ३२ आयत।

मेने पवीतन नाम को हलुक न कनो, पनंतु मैं इस-नाईल के संतानों में पवीतन होगा, मैं पनमेसन तुमहें पवीतन कनता हों।

प: तीसनी अगीय़ा से हमें क्या सीप्पा याहीए?

उ: तीसनी अगीय़ा से हमें यह सीप्पा याहीए, की

ग्रदपी हम इस अगीया के तोड़ने के दंड से इस लोक में व्रयें, तो भी परलोक में परमेसर के करोघ से न व्रयेंगे।

मलाप्पी का २ परव् २ आयत।

यदी तुम लोग मेरे नाम की महीमा करने को न सुनोगे, और मन न लगाओगे, तो सेनाओं का परमेसर कहता है, की मैं तुम पर सराप भेजोंगा, मैं तुमहारे आसीस को सरापोंगा।

३ परव् ५ आयत।

और मैं नीआव के लीए तुमहारे पास आओंगा, और मैं टोनहों के व्रीरुध, और व्रभीयारीओं के व्रीरुध, और झुठी कीरीयक के व्रीरुध यटक साप्पी होंगा।

मती १२ परव् २६ आयत।

परंतु मैं तुमहें कहता हुं, की हरएक व्रयरथ व्रयन, जो मनुप्प कहते हैं, वे व्रीयार के दीन में उसका लेप्पा देंगे।

पः यौथी अगीया क्या हैं?

उः यौथी अगीया यह है, की तु पवीतर जान के व्रीसराम दीन को समरन कर, छः दीन में परीसरम करके अपने सारे काम काज कर, परंतु सातवां दीन तेरे ईसर परमेसुर का व्रीसराम है, उसमें कोई काम

मत कर, न तु, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी न तेरे ढोर, न तेरे उपरी जन, जो तेरे फाटकों के भीतर हैं, कीयोंकी परमेसर ने छः दीन में सरग, और पीरथीवी, और समुद्र, और सब, जो उन में हैं बनाया, और सातवें दीन में बीसराम कीया, इस लीए ईसर ने बीसराम दीन पर आसीस दीया और उसे पवीतर ठहराया।

उतपत का २ परब २—३ आयत।

और ईसर ने अपने कारजों को जो उसने कीयाथा, सातवें दीन में समापत कीया, और उसने सातवें दीन में अपने सारे कारजों से, जो उसने कीया था बीसराम कीया, और ईसर ने सातवें दीन पर आसीस दीया, और पवीतर ठहराया, इस कारन को उसी में उस ने अपने सारे कारज से, जो ईसर ने उतपंन कीया और बनाए बीसराम कीया।

जातरा की पुसतक ३१ परब १३—१५ आयत।

की तु ईसराइल के संतानों को यह कहके बोल, की नीसचै तुम बीसराम का पालन करो, इस लीए की वुह मेरे और तुमहारे मघ में और तुमहारी समसत पीढीयों में एक चीनह है, जीस तें तुम जानो की मैं परमेसर तुमहें पवीतर करता हुं, इस कारन बीसराम

का पालन करो, कीयोंकी वुह तुमहारे लीए पवीतर है, हर एक, जो उसे असुध करेगा, नीसचै वध कीया जाएगा, कीयोंकी जो कोई उसमें कारज करे, सो अपने लोगों में से काट डाला जाएगा, छः दीन कारज होवे, परंतु सातवां चैन का वीसराम परमेसर के लीए पवीतर है, सो जो कोई वीसराम के दीन में कारज करे, वुह नीसचै मार डाला जाएगा।

प: चौथी अगीया हम से क्या चाहती है?

उ: चौथी अगीया हम से यह चाहती है, की हम जो जो दीन परमेसर ने अपने धरम पुसतक में पवीतर सथापीत कीया, उनहें मानें, और सात दीन में से एक दीन ईसर की भकती में काटें।

जातरा का ३५ पर्व २ आयत।

छः दीन लों कारज कीया जावे, परंतु सातवां दीन तुमहारे लीए पवीतर दीन होवे, परमेसर के चैन का वीसराम दीन होगा, जो कोई उसमें कारज करेगा, मार डाला जायगा।

लैव्यैवसथा १९ पर्व ३० आयत।

मेरे वीसरामों का पालन करो, और मेरे पवीतर सथान को परतीसठा करो, मैं परमेसर हूं।

व़ीवाद का ५ पनव़ १२ आय़त।

ग़ीसनाम दीन को पवीतन के लीए घानन कन, जैसा पनमेसन तेने ईसन ने तुहे अगीय़ा की है।

लुका का १३ पनव़ १५—१६ आय़त।

तव़ पनभु ने उतन दीय़ा, औान उसको कहा, की हे कपटी, व़ीसनाम के दीन में क्या तुम में से हन एक अपने व़ैल औान गदहे को सथान सेनहीं प्पोलता, औान पानी पीलाने नहीं लेजाता, औान क्या उयीत न था, की इव़नाहीम की पुत्री होके यह सीतनी, जीस को देप्पो सैतान ने इन अठानह व़नसों से व़ांच नप्पा है, व़ीसनाम के दीन में इस व़घन से प्पोली जाय़।

पः सातवें दीन में से पनमेसन ने कौन सा दीन अ-पनी भकती के लीए ठहनाय़ा?

उः संसान के आनंभ से ईसा मसीह के जी उठने लों पनमेसन ने अपने भकती के लीए सनीयन व़ीसनाम का दीन ठहनय़ा, पनंतु मसीह के जी उठने से इतवान व़ीसनाम का दीन ठहनाय़ा, इस लीए की उसी दीन पन ईसा गोन से जी उठा।

उतपती २ पनव़ ३ आय़त।

औान ईसन ने सातवें दीन पन आसीस दीय़ा, औान पवीतन ठहनाय़ा, इस कानन की उसी में उसने अपने

सारे कारजों से, जो ईसर ने उतपंन कीया और बना-
या वीसराम कीया।

नातरा का १६ परव २५—२६ आयत।

और मुसा ने कहा, की उसे आज खाओ, कीयोंकी
आज परमेसर का वीसराम है, आज तुम खेत में न
पाओगे, छः दीन लों उसे बटोरो, परंतु सातवां दीन
वीसराम है, उस में कुछ न पाओगे।

युहंना का २० परव १९ आयत।

फीर उसी दीन, जो अठवारे का पहीला था, संधया
के समय में, जब उस सथान के दुवार, जहां सब सीख
एकठे थे, यहुदीओं के डर के मारे बंद थे, ईसा आया
और मध में खड़ा हुआ, और उनहें बोला. की तुम
पर कुसल।

परेरीतों २० परव ७ आयत।

और अठवारे के पहीले दीन, जब सीख लोग रोटी
तोड़ने के लीए एकठे हुए, वीहान को बीदा होने के
लीए पुलुस उनहें उपदेस करने लगा, और कथा को
आधी रात लों बढ़ाया।

प्र: इतवार कीस परकार से हमें पवीतर माना चाहीए?

उ: इतवार इस परकार से हमें माना चाहीए की
हम उस दीन और पवीतर काम में नहीं, अनयात पर-

मेश्वर की भकत और परार्थना और समसत घरम कारज में लवलीन रहें, और संसारीक कारज और हीनता से, जो आवेसक नहीं, हम अपने हीथ उठाए रक्खें।

लैव्यय का २३ परब्र ३ आयत।

छः दीन काम काज कीया जाय, परंतु सातवां दीन, जो वीसराम का है, उसमें पवीत्र सभा होगी, कोई कारज न करो, यह तुमहारे समसत नीवासों में परमेसर का वीसराम है।

इरमीया का १७ परब्र २१—२२ आयत।

परमेसर यों कहता है, की तुम आप आप से चौकस रहो, और वीसराम के दीन में बोझ मत ढोओ, और न यरूसलीम के फाटकों में से लेजाओ, और वीसराम दीन में अपने अपने घर से बोझ मत लेजाओ, और कोई बेवहार मत करो, परंतु जैसा मैं ने तुमहारे पीतरों को आगीया की है, वीसराम दीन को पवीत्र रक्खो।

आसीया का ५८ परब्र १३—१४ आयत।

यदी तु मेरे पवीत्र दीन में अपने अभीलास को करने से और वीसराम से अपना पांव रोक लेगा, और वीसराम को आनंद का दीन, और परमेसर के पवीत्र

सबत को सनतोसठा कहेगा, और अपनी इच्छा से अलग सहके अपने आनंद सन यलने से, और वोनथा वातयीत से अलग नहके उसको सनतोसठा कनेगा, तव तु सनमेसन से आनंदीत होगा ; और मैं तुझे पीनथीवी के उंये सथानें सन यढ़ाउंगा, और मैं तुझे तेने पीता याकुव का अधीकान खीलाउंगा, कीयोंका यह सनमेसन का मुख्य वयन है।

६६ सनव २३ आयत।

और वोसनाम से वोसनाम लों सनमेसन कहता है, की सानें मनुष्य आके मेने आगे सेवा कनेंगे।

प: यौथी आगीया क्या वनजती है ?

उ: यौथी आगीया यह वनजती है, की हम सनमेसन की भकती से नीसयोंत वोसनाम के दीन सन न नहें, और पाप और लीला कनीड़ा और संसानीक कानज सन घीयान न कनें, और वीना आवेसक काम के कोई कुछ काम न कने।

नेहेमीया का १३ सनव १७—१८ आयत।

तव मैं ने यहूदा के कुलीनों से वीवाद कनके उनसे कहा, की यह क्या वुना काम है, जो तुम कनते हो, और वीसनाम को असुध कनते हो, तुमहाने पीतनों ने ऐसा नहीं कीया, और हमाना ईसन हम सन और इस

नगन पन ग़ह सानी वुनाई नहीं लाया, तद भी तुम ग़ीसनाम दीन को ग्रसुच कनके इसनाईल पन ग्रधीक कोप भड़काते हो।

व़ीवाद का १० पनव़ १२ ग्रायत।

ग्रव़ हे इसनाईल पनमेसन तेना ईसन तुम से क्या याहता है, केवल ग़ह ही की तु पनमेसन ग्रपने ईसन से डने, ग्रौन उस के साने मानगों पन यले, ग्रौन उस से पनेम नष्पे, ग्रौन ग्रपने मन से ग्रौन ग्रपने साने पनान से पनमेसन ग्रपने ईसन की सेवा कने।

इनमीग़ा का १७ पनव़ १७ ग्रायत।

पनंतु ग़दी व़ोसनाम दीन को पवीतन नष्पने को ग्रौन कोई व़ोह्ढ ढोके ग़नोसलीम के फाटकों में से जाने को मेनी न सुनोगे, तव़ मैं उसके फाटकों में ऐक ग्राग लगोंगा, ग्रौन वह ग़नोसलीम में के भवनों को भसम कनेगी, ग्रौन वुह वुताई न जाग़गी।

प: यौथी ग्रगीग़ा से हमें क्या सीष्पा याहीए?

उ: यौथी ग्रगीग़ा से हमें ग़ह सीष्पा याहीए, की हम छः दीन में ग्रपने समसत संसानी काम कनें, ग्रौन सातवान जो ईसन का पवीतन दीन है मानें, ग्रौन उस दीन पन केवल उसकी भकती ग्रौन धनम कानज कनें।

जातना का ३१ पनव़ १६—१७ आय़त ।

इस कानन, इसनाईल के संतान व़ीसनाम का पालन कनें, की सनातन के नीय़म के लीए उनकी समसत पीढ़ीओं में व़ीसनाम का पालन होवे; मेने ओान इस-नाईल के संतानों के मघ में य़ह सनव़दा के लीए यींनह है, कीय़ोंकी पनमेसन ने छः दीन नें सनग ओान पीनथीवी उतपंन कीए, ओान सातवें दीन अवकास पाय़ा ओान तनीपत ज्ञआ ।

आसाय़ा का ५६ पनव़ २ आय़त ।

घन वुह मनुष्य, जो य़ह कनता है, ओान मनुष्य का पुत्र जो दीनढ़ता से उसे घानन कनता है, तो व़ीसनाम को पालन कनता है, ओान उसे असुघ नहीं कनता ओान अपना हाथ कुकनम कनने से प्यींये नहता है ।

जातना का ३४ पनव़ २१ आय़त।

छः दीन लों कानज कनना, पनंतु सातवें दीन व़ीस्नाम कनना, हल जोतने ओान लवने का समय़ हो व़ीस-नाम कनना ।

प: पांयवीं अगीय़ा क्या है ?

उ: पांयवीं अगीय़ा य़ह है, की तु अपने माता पीता को आदन दे, जीस तें तेनी व़य़ जो तेने ईसन पनमेसन ने तुझे पीनथीवी पन दी है, व़ढ़ जाय़ ।

लैव्रय़ का १९ पनव्र ३ आयत।

तुम अपने अपने माता पीता से डनते नहो, औान मेने व्रीसनाम को पालन कनो, कोय़ोंकी मैं पनमेसन तुमहाना ईसन ड़ं।

अपरसीय़ों का ६ पनव्र २—३ आयत।

तु अपने माता पेता को पनतसठा दे, जो पहीली अगीय़ा पनतीगया सहीत है, जीस नें तेना भला होवे, औान पीनथावी पनं तेना जीवन अधीक होवे।

सुलेमान का १ पनव्र ८—९ आयन।

हे मेने व्रेटे अपने पोता के उपदेस को सुन, औान अपनी माता की व्रेवसथा को तीय़ाग मत कन, कोय़ोंकी वे तेने सीन के लीए अभुसन, औान तेने गलेकी सीकन होंगे।

इव्रनानीय़ों का १२ पनव्र ९ आयत।

औान जव्र हम अपने सनीन के पीता को, जीनहों ने हमें ताड़ना की आदन कीय़ा, क्या हम कीतना अधीक आतमा के पीता के व्रस में न होंगे औान जीय़ेंगे ?

पः पांयवीं अगीय़ा हम से क्या याहती है ?

उः पांयवीं अगीय़ा हम से यह याहती है, की हम अपने माता, पीता, औान पनघान लोगों का आदन कनें,

और हर ऐक मनुष्य को, क्या परधान, क्या साथी, क्या छोटा, अपने अपने गत के समान आदर करे।

लैव्यव्यवस्था का १९ पर्व्व २८ आयत।

पके वालों के आगे उठ खड़ा हो, और पुरनीया के मुंह को परतीसठा दे, और ईस्वर से डर, मैं परमेस्वर हूं।

अफसीओं की ६ पर्व्व ५—६ आयत।

हे सेवको तुम लोग उनके जो जगत में तुम्हारे स्वामी हैं, अपने मन की सीधाई से डरते और थर-थराते हुए ऐसे अगीया के वस में हो, जैसे मसीह को न दीखाउट सेवा से, जैसा मनुष्य के परसन्न करनेहारों से, परंतु जैसा मसीह के सेवकों के समान, मन से ईस्वर की इच्छा पर चलो।

रूमीयों की १२ पर्व्व १० आयत।

भाई की सी पीत से आपुस में दया रक्खो, आदर की रीत से ऐक दुसरे को परतीसठा दो।

प: पांचवी अगीया क्या बरजती है?

उ: पांचवी अगीया यह बरजती है, की हम अपने परधान लोगों और साथीओं और छोटों की, बुराई न करें, और उनके कल्यान के बीरुध कुछ न करें।

नुमीयों का १३ पनव्र ७ आयत।

सो सव्र का, जो आवते हो मन देउ, औान जीसे कन याहीए कन, औान जीसे सुलक याहीए सुलक देओ, औान जीसे डना याहीए डनो, औान जीसको पनतीसठा याहीए पनतीसठा देउ।

कलसीओं ३ पनव्र १८—२२ आयत।

हे पतनीयो अपने अपने पती के व्रस में नहो, जैसा पनभु में जोग है, हे पतीयो अपनी अपनी पतनीयों को पीआन कनो, औान उनसे कड़वा न होओ, हे व्रालको तुम लोग अपने माता पीता की हन एक व्रात में अगीया मानो, कीयोंकी पनभु को यही भाता है, हे पीतनो अपने व्रालकों को मत कलपाओ, न होवे की वे उदास हो जायें, हे सेवको तुम लोग उनकी, जो सनीन के वीषै में तुमहाने सुवामी हैं, समसत व्रातें में अगीया मानो, पन मनुष्यन के पनसंन कननीहानें की नाई दीषाने को न हो, पनंतु मन की सीधाई से ईसन से डनते ज्रुए।

सुलेमान का १५ पनव्र २० आयत।

व्रुधमान लड़का पीता को आनंद कनता है, पनंतु मुनष्य अपनी माता की नींदा कनते हैं।

पः पांयवीं अगीया से हमें क्या सीष्पा याहीए?

छः पांयवीं अगीआ से हमें ग्रह सीप्या याहीए, की पनमेसन अपनी महीमा औान मनुप्य के कलग्रान के लीए उन लोगों का जीवन काल, जो इस अगीआ के। मानते औान पालन कनते हैं, व्रढावेगा।

सुलेमान का ३ पनव्र १—२ आयत।

हे मेने व्रेटे, मेनी व्रेवसथा के। मत भुल, पनंतु तेना मन मेनी अगोआओं के। पालन कने, कीओंकी वे दीन की व्रढती औान जीवन के व्रनस औान कुसल तुहे देंगे।

अफसीओं के। ६ पनव्र १—३ आयत।

हे व्रालके।, तुम लोग पनभु के लीए अपने माता पीता की अगीआ में नहो, कोओंकी ग्रह ठीक है; तु अपनी माता पीता के। पनतीसठा दे, जो पहीली अगी-आ पनतीगआ सहीत है, जीसतें तेना भला होवे, औान पीनथीवी पन तेना जीवन अधीक होवे।

इनमीआ का ३५ पनव्र १८—१९ आयत।

औान इनमीआ ने नीकाव्रीओं के घनाने से कहा, की सेनाओं का पनमेसन इसनाईल का ईसन ग्रों कहता है, इस कानन की तुमहों ने अपने पीता ग्रुनादाव्र की अगीआ मानी है, औान उसकी सानी सीप्या के। मानी है, औान उसकी सानी अगीआ के समान यला है, इस

लीए सेनाओं का पनमेसन इुसनाईल का ईसन ओो कहता है, की नीकाव के बेटे युनादाव की पांती में मेने आगे नीत प्पड़े होने के लोए प्रेक भी न घटेगा।

प: छठवीं अगीया क्या है?

उ: छठवीं अगीया यह है, की तु मनुप्प को घात मत कन।

उतपती का ८ पनव ६ आयत।

जो कोई मनुप्प का लोऊ व्रहावेगा, मनुप्प से उसका लोऊ व्रहाया जायगा, कीयोंको ईसन के नुप से मनुप्प व्रनाया गया है।

गीनती की कीताव ३५ पनव १०—३३ आयत।

जो कीसी को मान डाले सो घातक साप्पीयों की साप्पी के समान घात कीया जाए, पनंतु प्रेक साप्पी की साप्पी से कीसी को घात न कनना, औान तुम घातक के पनान की संती, जो घात के जोग है मोल मत लेओ, पनंतु वुह अवेस माना जाय; सो जहां हो उपदेस को असुच मत कीजीयो, कीयोंकी घातही से देस असुच होता है, औान देस उस लोऊ से, जो उसमें व्रहाया गया है सुच नहीं होता, पनंतु केवल उसी के लोऊ से जीस ने उसे व्रहाया है।

जातरा का २२ पत्र्व २—३ आयत।

यदी योन सेंध मानते ऊए पाया जाए, और कोई उसे मान डाले, तो उसको संती लोऊ न व्रहाया जायगा, यदी सनज उदय होवे, तो उसकी संती लोऊ व्रहाया जावेगा।

प: छठवीं आगीया हम से क्या याहती है ?

उ: छठवीं अगीया हम से यह याहती है, की हम अपने और औनों के पनान व्रयाने को येसठा करें।

सुलेमान का २४ पत्र्व ११—१२ आयत।

यदी तु मीनतु के प्पीयेगयों को घोप उनहें, जो माने वाने पन हैं, व्रया न ले, यदी तु कहे, की देप्पो, हम जानते न थे, तो क्या वुह जो अंतःकनन को जांयता है यह नहीं सोयता, और जो तेने पनान का नछक है, सो क्या नहीं जानता ; और क्या मनुप्य को उसके कानज के समान पलटा न देगा।

व्रीवाद का १९ पत्र्व ११—१२ आयत।

पनंतु यदी कोई जन जो अपने पनोसी से व्रैन नप्पता हो, और उसकी घात में लगा हो, और उसके व्रीनोध में उठके उसे ऐसा माने, की वुह मनजाय और इन में से ऐक नगन में भाग जाय, तो उसके नगन के पनायीन भेज के उसे वहां से मगावें, और लोऊ के पनतीफल

हाता के हाथ में सौंप देवे, की वुह घात कीया जाय; तेरी आंख उस पर दया न करे, परंतु तु नीरदोष लोहु के पाप के इसराईल से यों दुर करना तेरा भला हो।

प: छठवीं आगीया क्या व्रजती है ?

उ: छठवीं आगीया यह व्रजती है, की हम अपने या और कीसी मनुष्य के प्रान के घातीक न होवें, और वुरी व्रीयान उन से न करें।

लैव्रय का २४ पर्व १७ आयत।

और जो दुसरे को मार डालेगा, सो नीसय्यै घात कीया जायगा।

व्रीवाद का २४ पर्व ६ आयत।

कोई मनुष्य कीसी की चकी के उपर का, अथवा नीचे का, पाट व्रंधक न रख्खे, कीयोंकी वुह जीवन को व्रंधक रख्खता है।

पांचवीं गीत ६ आयत।

तु मीथ्या व्रादी को नास करेगा, परमेसर व्रधीक और छली से घीन करेगा।

युहंना की १ पत्री ३ पर्व १५ आयत।

जो कोई अपने भाई से वैर रख्खता है; हतयारा है,

श्रीन तुम जानते हो की कीसी हतयाने में श्रनंत जीवन नहीं वसता।

प: सातवीं श्रगी या क्या है ?

उ: सातवीं श्रगीया यह है, की तु पन सीतनी गमन मत कन।

लैव्यय का २० पनव १० श्रायत।

श्रीन जो मनुष्य कीसी की पतनी से श्रथवा श्रपने पनोसी की पतनी से कुकनम कने, कुकनमी श्रीन कुकनमनी दोनो नीषये मानडाले जा येंगे।

वीवाद का २२ पनव २२—२४ श्रायत।

यदी कोई पुनुष्य वीवाहता सीतनी से पकड़ा जाय, तव वे दोनों मान डाले जावें, वयस्रीयानी पनुष्य श्रीन सीतनी; इस नीत से तु श्रपने में से वुनाई को दुन कनना, यदी कुंवानी लड़की कीसी से वयन दत्त होवे, श्रीन कोई दुसना पुनुष्य उस से कुकनम कने, तव तुम उन दोनों को उस नगन के पराटक पन नीकाल लाश्रो, श्रीन उनपन पथनाव कनके उन दोनों को मान डालो, कंनया को इस लीए, की वुह नगन में होते ऊए न चीलाई, श्रीन पुनुष्य को इस कानन, की उसने श्रपने पनोसी की पतनी को श्रपनी कीया, इस नीत से तु वुनाई को श्रपने में से दुन कनना।

अफरसीयों को ५ पत्र ११—१२ आयत।

और अंधकार के नीसफल कारजन में साझी मत होओ, परंतु वीसेस करके उनहें दोष्प देउ, कोयोंकी उनके गुपत कारजन की यरचा भी करना लाज है।

प: सातवीं आगीया हम से क्या याहती है?

उ: सातवीं आगीया हम से यह याहती है, की हम अपने और अपने परोसी की पतीव्रता मनवायाकाया से रछा करें।

तसलुनीयां का ४ पत्र ३—४ आयत।

कीयोंकी ईसर की इछा तुमहारी पवीत्रताइ है, की तुम लोग वयभीयारा से वये रहो, की हर ऐक तुमहों में से जाने, की अपने अपने पात्र को पवीत्रता से और परतीसठा से रप्पे।

सुलमान का ५ पत्र ३—५ आयत।

कीयोंकी पर सीतरी के होंठ से मधु का छता टपकता है, और उसका तालु तेल से अधीक यीकना है, पर उसका अंत नाग दौना की नाई कड़वा है, और दो धारे प्पड्ग की नाई यीप्पा, उसके पांव मीरतु में उतरते हैं, उसके डग नरक को धारन करते हैं।

रुमीयो को १३ पत्र १३ आयत।

और जैसा की दीन का व्यवहार है संवर के यर्ते,

ऊलड़ श्रीर मतवाला पन में नहीं, वयभीयार श्रौर लुयपन में नहीं, झगड़ा श्रौर डाह में नहीं।

१ याकुब का १ पतरी १४—१५ आयत।

परंतु हर कोई अपनी ही लालसा से ख्रींचा जाके, श्रीर फुसलाया जाके परीक्षा में पड़ता है, श्रौर जब लालसा गरभनी ऊई, तो पाप जनती है, श्रौर पाप पुरा होके मीरतु को उतपंन करता है।

पः सातवीं अगीया क्या बरजती है?

उः सातवीं अगीया यह बरजती है, की हम असुच बयन न कहें, श्रौर मलीन योनता श्रौर कुकरम न करें श्रौर कुदीनीसट से कीसी सीतरी को श्रौर न देखें।

मती का ५ परब २८ आयत।

पर मैं तुमहें कहता ऊं, की जो कोई कुइक्षा से सीतरी को ताक वुह अपने मन में उस से बयभीयार कर युका।

१ तीमताउस को २ परब ९—१० आयत।

इस रीत से सीतरी भी अपने को लाज श्रौर संकोय से, श्रौर संजम से संवारे, बाल गुथने, अथवा सोने, अथवा मातीयों, अथवा बऊमोल के बसतर से नहीं;

पर्नंत् उतम कारजन से संवारे जैसा सीतरीयों को जो ईसन की सेवाती कहावती है जोग है।

अफ़सीयों को ५ पर्व ३—४ आयत।

पर्नंतु व्रैभोयार और हन ऐक परकार की अपवीतरता और लालच की यनया लों तुमहों में न होवें, जैसा की साधुन को उचीत है, और न सलोनता न मुढ व्रात, न ठठे, जो ठीक नहीं हैं, पर्नंतु व्रीसेस करके सतुत करना होवे।

१ करंतोयों ६ पर्व ९—१० आयत।

क्या तुम लोग नही जानते, की धरमी ईसन के राज के अधीकारी न होंगे? छल न प्याओ, न व्रैभोयारी न देव पुजक, न परसीतरी गामी, न जुमेहनों न पुरुष्य गामी, न योन, न लालची, न मधोप, न नींदक, न नीयोरी ईसन के राज के अधीकारी होंगे।

प: आठवीं अगीया क्या है?

उ: आठवीं अगीया यह है, की तु योरी मत कर।

लैव्रव्रैवस्था १९ पर्व ११—१३ आयत।

तुम योरी मत करो, और हुठाई से व्रेवहार न करो, ऐक दुसरे से हुठ मत व्रोलो, अपने परोसी से छल मत कर, और उस से कुछ मत युना, व्रनीहारो की व्रनी रात भर व्रीहान लों तेरे पास न रहजाय!

१ तसलुनीग्रों को ४ पनब्र ६ आग्रत।

की कोई अपने भाई से धुनता और छल न करे, कीग्रोंकी परभु समसत ऐसों का पलटा लेगा, जैसा की हम ने आगे भी तुमहों से कहा, और साप्पी दी।

होसींग्रा का ४ पनब्र १—३ आग्रत।

वे कीरीग्रा प्पा प्पा, और हुठ ब्रोल ब्रोल, और घात और योरी और ब्रैभीयार कर कर, फुट नीकले हैं; और लोऊ लोऊ से पड़ंया गए हैं, इस लीए देस ब्री-लाप करेगा, और उस में के हर एक नीवासी यौगान के पसु और आकास के पंछी सहीत मुरह्यायेंगे, और समुद्र की मछलीग्रां भी ली जायेंगी।

सुलेमान का २८ पनब्र ८—२४ आग्रत।

जो ब्रीग्राज और अधरम से अपनी संपत को ब्रढ़ाता है सो उस के लीए, जो कंगालों पर दग्रा करेगा ब्रटोरता है जो अपनी माता अथवा पीता को लुटता है, और कहता है की ग्रह अपराध नहीं, सो ब्रीनासक का संगी है।

प: आठवीं अगीग्रा हम से क्या याहती है?

उ: आठवों अगीग्रा हम से ग्रह याहती है, की हम अपने और औरों की धन को नीत से कमावें और ब्रढ़ावें।

सुलेमान का २७ पनव् २३ २४ आयत।

अपने ह्ंडों की दशा के जानने में जतन कन, औान अपने ढोनों पन मन लगा, कींयोकी व्ल सदा नहीं नहता, औान क्या सुकुट पीढ़ी से पीढ़ी लों?

व्रीवाद की पुसतक २२ पनव् १—३ आयत।

तु अपने भाई के व्रैल औान भेड़ के भटकी ऊई देष्प के आप के उन से मत छीपा, पनंतु कोसी भांत से उनहें अपने भाई पास फेन ला, औान यदो तेना भाई तेने पनोस में न हे, अथवा तु उसे पहीयानता नहीं; तव् उसे अपने ही घन ला, औान वुह तेने पास नहे; जव् लों तेना भाई उस की प्योज कने, औान तु उसे फेन देना; औान इसी नीत से तु उस के गदहे से, औान उसके व्रसतु से, औान सव् कुछ से, जो तेने भाई की प्योइ ऊई हे, औान तु ने पाई है ऐसाही कन, तु आप को मत छीपाना।

सुलेमान का २२ पनव् १९ आयत।

जो कंगाल पन अंधेन कनता है, औान जो घनी को देता है नीसयै दनीदन होगा।

पः आठवीं अगीया क्या व्रनजती है?

उः आठवीं अगीया यह व्रनजती है, की हम कीसी

को छल न देवें, और को हम अपने और अपने परोसी के घर को कीसी रीत से नसट न करें।

१ तीमताउस को ५ परब्र ८ आय़त।

परंतु य़दी कोई अपने ही के और ब्रीसेस करके अपने घर के लीए नहीं सहेजता, तो वुह ब्रीसवास से मुकर गय़ा, और अब्रीसवासीय़ों से भी बुरा है।

सुलेमान का ११ परब्र १ आय़त।

छल की तुला परमेसर को घीन है, परंतु पुरा ब्रटष्परा उसको परसंनता है।

य़ाकुब्र का ५ परब्र ४ आय़त।

देषो उन ब्रनीहारों की ब्रनी, जीनहों ने तुमहारे षेत काटे, जीनसे तुमहों ने छल कीय़ा, पुकारती है; और काटनेवालों के सब्रद सेना के परभु के कान लों पहुंचे।

३७ गीत २१ आय़त।

दुसट उधार लेता है, और भर नहीं देता, पर घरमी दय़ा करता है, और देता है।

ब्रीवाद का २५ परब्र १३—१६ आय़त।

तु अपनी थैली में ब्रड़े छोटे ब्रटष्परे न रषना, अपने घर में छोटा ब्रड़ा नपुआ मत रषना, पुरे और ठीक ब्रटष्परे रषना, और पुरे और ठीक नपुए रषना, जीस-

तें उस देस में, जीसे पनमेसन तेना ईसन तुहे देता है, तेना जीवन व़ढ़ जाय़, कीय़ोंकी सव़ जो ऐसा अचनम कनते हैं, पनमेसन तेने ईसन से घीनीत है।

प: नवीं अगीय़ा क्या है ?

ड: नवीं अगीय़ा य़ह है, की तु अपने पनोसी पन हुठी साप्फी मत दे।

ज़कनीय़ा का ८ पनव़ १६—१७ आय़त।

सो ये ये व़ातें कहो, की हन ऐक जन अपने अपने पनोसी से सच कहे, सत व़ीयान कनें; औान तुमहाने फाटकों में कुसल का व़ीयान होवे, औान हन एक जन अपने अपने पनोसी के व़ीनुघ अपने अपने मन में वुनाई न समहे, औान हुठी कीनोय़ा से पनीत न नप्पें, कोय़ोंकी पनमेसन कहता है, की मैं इन व़ातों से घीन कनता हुं।

सुलेमान का १४ पनव़ ५ आय़त।

व़ीसवसत साप्फी हुठ न व़ोलेगा, पनंतु हुठा साप्फी हुठ उयानन कनेगा।

आसीय़ा ६३ पनव़ ८ आय़त।

कीय़ोंकी उसने कहा है, की नीसच्चे वे मेने लोग हैं, औान लड़के हुठ न व़ोलेंगे, सो वुह उनका मुकतदाता हुआ।

सुलेमान का १२ पत्रब १९—२२ आयत।

सचाई के होंठ सदा लों स्थीर रहेंगे, परंतु झुठी जीभ पलभर की है, झुठे होंठों से परमेश्वर को घीन है, परंतु जो सच्चा ब्रेवहार करते हैं, सो आनंदीत हैं।

सुलेमान का ६ पत्रब १६—१९ आयत।

परमेश्वर इन छओं से बैर रप्पता है, हां सात से उस का जीव घीन करता है, अहंकारी आंप्प, झुठी जीभ, और हाथ, जो नीरदोप्प का लोहु बहाता है, मन जो बुरा ब्रीयार बांघता है, पांव जो बुराई के लीए बेग दौड़ते हैं, झुठा साप्पी झुठ बोलता है, और वुह जो भाइयों में बीगाड़ बेता है।

यहुंना देवग्य का २१ पत्रब ८ आयत।

परंतु भयमान और अबीस्वासी, और घीनौना, और हतयारा, और बैभीचारी, और टोनहा, और मुरत पुजक, और सारे झुठे उसी झील में जो आग और गंधक से जलती है, अपना अपना भाग पावेंगे, यह दुसरी मीरतु है।

प: नवीं अगीया हम से क्या चाहती है?

उ: नवीं अगीया हम से यह चाहती है, की हम आपस में सच बोलें, और अपने परोसी के कारन सच

ही साप्पी देवें, श्रीर श्रपने श्रीर श्रीनों के वद नामी न करें।

फरीलीपीश्रों को ४ पत्र ८ श्रायत।

सो श्रव हे भाइयो जीतनी वसतें सच हैं, जीतनी वसतें जोग हैं, जीतनी वसतें नीश्राप की हैं, जीतनी वसतें पवीतर हैं, जीतनी वसतें पत्रीय हैं, जीतनी वसतें सुन्नमान हैं, जो कछ गुन श्रीर कुछ सतुत होवे, तो इन वातों का समरन करो।

तीतस के ३ पत्र १—२ श्रायत।

उनहें चेता दे, की राजाश्रों श्रीर सामरथीयों के वस में होवे की श्रदंघीप्पों को मानें, श्रीर हर पर-कार की भलाई करने पर सीघ रहें, कीसी को कलंक न लगावें, श्रीर झगड़ालु न होवें, परंतु घीमा श्रीर समसत मनुप्पन को कोमलता दीप्पावें।

सलेमान का २४ पत्र २८—२९ श्रायत।

श्रपने परोसी पर श्रकारन साप्पी मत हो, श्रीर श्रपने होंठों से छल मत कह, की मैं उस से ऐसा करोंगा, जैसा उस ने मुससे कीया; मैं मनुप्प को उसके काम के समान पलटा देउंगा।

श्रफसीश्रों ४ पत्र २५ श्रायत।

इस लीए हर एक झुठ को श्रलग करके हर एक

जन अपने परोसी से सत बोले, कीयोंकी हम लोग ऐक दुसरे के अंग हैं।

१०१ गीत ७ आयत।

जो छली है सो मेरे घर में न रहेगा, और झुठा मेरे आगे सथीर न होगा।

ऐयुब २७ पनव ४ आयत।

मेरे होंठ दुसटा न कहेंगे, और मेरी जीभ छल न उचारेगी।

सुलेमान का १९ पनव ५ आयत।

झुठा साख्यी नीरदोष्य न ठहरेगा, और मीथयावादी न बचेगा।

प: नवीं अगीया क्या बरजती है?

नवीं अगीया यह बरजती है, की हम सचाई के बीरुध कुछ काम न करें, और कीसी को बदनामी न करें।

जातना की २३ पनव १ आयत।

तु मीथया संदेस मत फैलाइयो, अधरम की साख्यी में दुसटों का साथी मत हो।

सुलेमान की २६ पनव १८—१९ आयत।

जैसा बौड़हा, जो लुवर को, और बान और मीरतु

को फेंकता है, जो मनुष्य अपने परोसी को छल देकर कहता है, की मैं ने तो ठठा कीया सो ऐसाही है।

२४—२५ आयत।

जो बैर रष्पता है, सो होंठों से जाना ऊआ है, और मन में छल रष्प छोड़ता है; जब वुह अनुगरह का षबर्द करता है, उषकी परतीत मत कर, कीयोंकी उस के मन में सात घीन है।

पतरस की १ पतरी ३ पत्र १० आयत।

कीयोंको जो जीवन को पीआर कीया याहे, और भले दीनों को देष्पा याहे, सो अपनी जीभ को बुराई से और अपने होंठों को छल की बात बोलने से परे रष्पे।

युहंना का ८ पत्र ४४ आयत।

तुम लोग अपने पीता सैतान से हो, और अपने पीता की बाया कीया याहते हो, वुह तो आरंभ से घातक था, और सत में सथीर न रहा, कीयोंकी उस में सयाइ नहीं जब वह झुठ कहता है, तो अपने ही का बोलता है, कीयोंकी वुह झुठा है, और झुठ का पीता है।

५८ गीत ३ आयत।

कोष्प से दुसट फीर गए, वे उदर से भटक के झुठ बोलते हैं।

प्रुहंना देव़ का २१ पनव़ २७ आयत।

श्रीन कोई अपवीतन श्रीन घीन कानज कनने वाली श्रीन हुठ उसमें कोसी नीत से पनवेस न कनेगी, पनंतु केवल वेही, जो मेमना के जीवन के पुसतक में लीष्पे हैं।

पः दसवीं अगीग़ा क्या है?

उः दसवीं अगीग़ा ग़ह है, की तु अपने पनोसी के घन की लालय मत कन, श्रीन अपने पनोसी की सीतनी की लालय मत कन, श्रीन उसका दास, उसकी दासी, श्रीन उसके व़ैल, श्रीन उसके गदहे अथवा जो कुछ तेने पनोसी का है, उसकी लालय मत कन।

अफ़सीग़ों को ५ पनव़ ३—५ आयत।

पनंतु व़ैभीयान, श्रीन हन प्रेक पनकान की अपवीतनता, श्रीन लालय की यनया लों तुमहों में न होवे, जैसा की साधुन को उयीत है; कीग़ोंकी तुम लाग इसे जानते हो की न कोई व़ैभोयानी, न अपवीतन जन, न लालयी पुनुष्प, जो सुनत पुजक हैं, मसीह के श्रीन ईसन के नाज में अघीकान नष्पता है।

इव़नानीग़ों को १३ पनव़ ५ आयत।

तुमहाना यलन लोभ नहीत होवे, श्रीन जो जो, व़सतु तुमहानी हैं, उन से संतोष्प कनो, कीग़ोंकी उस

ने कहा है, की मैं तुझे न छोड़ेंगा, और न तुझे कधी कीसी भांत से तीयाग न करोंगा।

११९ गीत ३६ आयत।

मेरे मन को लालच की ओर नहीं, परंतु अपनी साप्पीयों की ओर झुका।

१ करीनतीयों का ५ परब ११ आयत।

पर मैं ने अब तुमहें लीप्पा है, की जो कोई भाई कहलाता, ब्रैभीचारी, अथवा लोभी, अथवा देव पुजक, अथवा नींदक, अथवा मदपी, अथवा नीयोरी होए, तो तुम लोग ऐसे की संगत न करना, हां ऐसे के संग भोजन भी न प्याना।

हबकुक का २ परब ९ आयत।

उस पर संताप, जो अपने घराने के लीए बुरी लालच करता है, जीसतें अपने प्योंते को उंचा बनावे, जीसतें वुह बुराइ के हाथ से बच जाय।

ऐयुब का २७ परब ८—९ आयत।

यदपी कपटी लाभ पावे, तथापी जब ईसर उस का परान लेता है, तब उसकी आसा क्या, जब उस पर दुप्प पड़ेगा, तब क्या ईसर उसका रोना सुनेगा?

मती का १६ परब २६ आयत।

कीस्रोंको मनुप्य को क्या लाभ है यदी वुह समसत

जगत के। पनापत कने? औान अपने पनान के। गवावे, अथवा मनुष्य अपने पनान की संती क्या देगा?

प: दसवीं अगीया हम से क्या याहती है?

उ: दसवों अगीया हम से यह याहती है, की हम अपने अपने दसा में संतुसट होवें, औान अपने पनोसी की कीसी वसतु की लालय न कनें।

लुका की इंजील १२ पनव १५ आयत।

तव उसने उनहें कहा, सोंयेत नहो, औान लोभ से पने नहो, कीयोंकी कीसीं का जीवन उसकी घन की अघकाइ से नहीं है।

१ तीमताउस के। ६ पनव ६—११ आयत।

पनंतु ईसन की सेवा संतोष्पता के संग वडा लाभ है, कीयोंकी हम जगत में कुछ न लाए; औान पनगट है, की हम उससे कुछ लेजा नहीं सकते, सो भोजन औान वसतन पाके हम उनहों से संतोष्प कनें, पनंतु वे, जो अपने के। घनमान आवेस कीया याहते हैं, सो पनीछा औान फंदे में औांघे मुंह गीनते हैं, औान वहुत सी मुनष्पता औान वुनी लालसा में पडते हैं, जो मनुष्पन के। सतीयानास औान वीनास में दे मानती हैं, कीयोंकी घन की पनीत समसत वुनाइयों की जड है, कीतने उसकी लालय के कनने से वीसवास के मानग से

भटक गए, और नाना परकार के सोक से छीद गए, परंतु हे ईसर केजन, इन वसतुन से भाग, और घरम और ईसर की सेवा और वीसवास और दया और संतोष्प और कोमलता का पीछा कर।

फीलीपीयों के ४ परव ११ आयत।

परंतु मैं कुछ याहके नहीं कहता, कीयोंकी मैं ने सीष्पा है, कीं जीस दसा में हो उसी में संतोष्प करुं।

४९ गीत १६—१७ आयत।

जव कोई घनमान हो जाय, अथवा उसके घन का वीभव वढ़जाय तो मत डर, कीयोंकी वुह मरने में कुछ साथ न लेजायगा, और उसका वीभव उसके पीछे पीछे न उतरेगा।

सुलेमान का २३ परव ५ आयत।

क्या तु अपनी आंष्पें उस पर दौड़ावेगा? जो नहीं है, कीयोंकी घन नीसचै अपने लीए पंष्प वनाता और गीघ की नाईं आकास की ओर उड़ जाता है।

प: दसवीं आगीया क्या वरजती है?

उ: दसवीं अगीया यह वरजती है, की हम जो कुछ हमारा है, उस में असंतुसट न रहें, और कुदरीसट से कीसी को न देष्पें।

उपदेशक ५ पर्व १०—१२ आयत।

जो चांदी से पृीत रखता है, सो चांदी से तृप्त न होगा; और न जो बहुताई से पृीत रखता है बहुताई से; यह भी वृथा है, जब संपत बढ़ती है, तो उसके खवैये भी बढ़ते हैं, केवल अपनी आंखों से देखने से उसके स्वामियों को क्या लाभ, परिश्रमियों की नींद चाहे थोड़ा खाय चाहे बहुत मीठी है, परंतु धन मान की बहुताई उसे सोने न देगी।

सुलेमान का १५ पर्व २७ आयत।

जो लाभ की लालच करता है, सो अपने घराने को दुख देता है, परंतु जो दान से बैर रखता है, सोई जीवेगा।

बीवाद का ५ पर्व २१ आयत।

अपने परोसी की पत्नी की इच्छा मत कर, अपने परोसी के घर की और उसके खेत की, अथवा उसके दास और दासी की, उसके बैल और गदहे की, और परोसी की किसी वस्तु की लालच मत कर।

सुलेमान का २२ पर्व १—२ आयत।

सुभ नाम बड़े धन से अधिक चुने जाने के जोग है' और कृपा सोने रुपे से अधिक, धनमान और

कंगाल ऐकठे मीखते हैं, पनमेसन उन सभों का कनता है।

मतो ६ पनव्र १९—२१ आय़त।

अपने लीए पीनथीवी पन घन मत व्रटोनो, जहां कीड़ा, औान काई व्रीगाड़ते हैं; औान जहां योन सेंध देते हैं, औान यनाते हैं, पनंतु अपने लीए सनग पन घन व्रटोनो, जहां कीड़ा औान काई नहीं व्रीगाड़ते; औान जहां योन सेंच नहीं दे सकते न युनाते हैं; कीय़ोंकी जहां तुमहाना घन है, तहां तुमहाना मन भी लगा नहेगा।

सुलेमान की दीनसटांत ११ पनव्र ४ आय़त।

कोप के दीन घन से लाभ नहीं होता, पनंतु घनम मीनतु से छोड़ाता है।

जातना २० पनव्र १—१८ आय़त।

फीन ईसन ने य़े सव्र व्रातें कहीं, की तेना पनमेसन ईसन जो तुहे मीसन की भुम से, औान व्रंघुआई के घन से नीकाल लाय़ा मैं ज़ं, मेने संमुप्प तेने लीए दुसना ईसन न होगा।

अपने लीए प्योद के कोसी की सुनत, औान कीसी व्रसतु की पनतोमा, जो उपन सनग में, अथवा नीये पीनथीवी में, अथवा जल में, जो पीनथीवी के नीये है,

मत व़नाईय़ो, न तु उन को पननाम मत कीजीय़ो, न उनकी सेवा मत कीजीय़ो, इस लीए की मैं पनमेसन तेना ईसन जलीत ईसन ऊं, पीतनों के अपनाघ का दंड उनके पुत्रों को, जो मेना व़ैन नप्पते हैं, उनकी तीसनी औान चौथी पीढ़ी लों देवैय़ा ऊं, औान उनमें से सहस-नों पन, जो मुझे पनेम कनते हैं, औान मेनी अगीय़ाओं को पालन कनते हैं दय़ा कनता ऊं।

पनमेसन अपने ईसन का नाम अकानथ मत लीजीय़ो, कोय़ोंकी पनमेसन उसे जो उसका नाम अकानथ लेता है नीसपाप न ठहनावेगा।

व़ीसनाम दीन को पवीतन नप्पने के लीए समनन कीजीय़ो, छः दीन लों अपने समसत कानज कीजीय़ो, पनंतु सातवां दीन तेने पनमेसन ईसन का है, उसमें कोई कुछ कानज न कने, न तु, न तेना पुत्र, न तेनी पुत्री, न तेना दास, न तेना दानी, न तेने पसु, न तेने पाऊन, जो तेने फाटक के भीतन हैं, इस लीए की पनमेसन ने छः दीन नें सनग औान पीनथीवी औान समुदन, औान सव़ कुछ, जो उनमें हैं व़नाए, औान सातवें दीन व़ीसनाम कीय़ा, इस कानन पनमेसन ने व़ीसनाम दीन को पवीतन औान पावन ठहनाय़ा।

अपने माता पीता को पनतीसठा दे, जीसनें तेनी व़य़

जीसे तेना पनमेसन ईसन तुझे पीनथीवी पन देता है, अधीक होवे।

हतीया मत कन।

पन सीतनी गमन मत कन।

योनी मत कन।

अपने पनोसी पन झुठी साप्पी मत दे।

अपने पनोसी के घन की लालच मत कन, अपने पनोसी कीं सीतनी, श्रान उसके दास, श्रान उसकीं दासी, श्रान उसके वैल, श्रान उसके गदहे, श्रान कीसी वसतु की, जो तेने पनोसी की है, लालच मत कन।